छत्तीसगढ़ भारती

कक्षा – 7

सत्र 2019–20

DIKSHA एप कैसे डाउनलोड करें?

विकल्प 1 : अपने मोबाइल ब्राउज़र पर diksha.gov.in/app टाइप करें।

विकल्प 2 : Google Play Store में DIKSHA NCTE ढूंढ़े एवं डाउनलोड बटन पर tap करें।

DIKSHA

मोबाइल पर QR कोड का उपयोग कर डिजिटल विषय वस्तु कैसे प्राप्त करें ?

DIKSHA App को लॉच करे → App की समस्त अनुमति को स्वीकार करें → उपयोगकर्ता Profile का चयन करें।

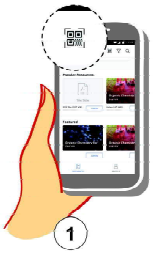

पाठ्यपुस्तक में QR Code को Scan करने के लिए मोबाइल में QR Code tap करें।

मोबाईल को QR Code पर केन्द्रित करें।

सफल Scan के पश्चात् QR Code से लिंक की गई सूची उपलब्ध होगी।

डेस्कटॉप पर QR Code का उपयोग कर डिजिटल विषय–वस्तु तक कैसे पहुँचे ?

(1) QR Code के नीचे 6 अंक का Alpha Numeric Code दिया गया है।

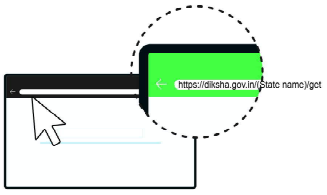

(2) ब्राउज़र में diksha. gov.in/cg टाईप करें।

(3) सर्च बार पर 6 डिजिट का QR CODE टाईप करें।

(4) प्राप्त विषय–वस्तु की सूची से चाही गई विषय–वस्तु पर क्लिक करें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

निःशुल्क वितरण हेतु

प्रकाशन वर्ष 2019

एस.सी.ई.आर.टी. छत्तीसगढ़, रायपुर

सहयोग– डॉ. हृदयकांत दीवान, विद्या भवन, उदयपुर

अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन

मुख्य समन्वयक श्री उत्पल कुमार चक्रबर्ती

विषय समन्वयक डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

संपादक डॉ. सी.एल. मिश्र, डॉ. विद्यावती चन्द्राकर

लेखक–मंडल

हिन्दी	छत्तीसगढ़ी
डॉ. सी.एल. मिश्र, श्री बी.आर साहू, डॉ. एस.एस. त्रिपाठी, श्री राजेंद्र पांडेय, श्री गजानंद प्रसाद देवांगन, श्री दिनेश गौतम, श्रीमती उषा पवार, डॉ. (श्रीमती) रचना अजमेरा, श्री अजय गुप्ता, श्री विनय शरण सिंह डॉ. रचना दत्त, श्री कार्तिकेय शर्मा	डॉ. जीवन यदु, डॉ. पीसी लाल यादव, श्री विनय शरण सिंह, डॉ. मांघी लाल यादव, श्री मंगत रवींद्र, श्री डुमन लाल ध्रुव, श्री पाठक परदेशी, श्री गणेश यदु, श्री कुबेर साहू, श्रीमती नम्रता सिंह, श्री निशिकांत त्रिपाठी श्रीमती मैना अनंत

आवरण पृष्ठ हेमंत अभयंकर

लेआउट डिजाइन रेखराज चौरागड़े

चित्रांकन रेखराज चौरागड़े, राजेन्द्र सिंह ठाकुर, विद्याभवन, उदयपुर, समीर श्रीवास्तव, गिरीधारी साहू

(इस पुस्तक में जिन रचनाकारों की रचनाएँ संकलित की गई हैं, उन सबके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति राज्य शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर अपना हार्दिक आभार प्रकट करता है।)

प्रकाशक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रक

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – .....

प्राक्कथन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर को सत्र 2002–03 में छत्तीसगढ़ शासन की ओर से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम तैयार करने तथा उन पर आधारित पाठ्यपुस्तकों की रचना करने का दात्यिव सौंपा गया था। यह निर्णय भी लिया गया था कि नवनिर्मित पाठ्यपुस्तकों का दो वर्षों तक राज्य के विभिन्न अंचलों के चयनित विद्यालयों में क्षेत्र–परीक्षण किया जाएगा और फिर विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, पालकों और विषय विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर उनमें संशोधन उपरांत उन्हें राज्य के समस्त विद्यालयों हेतु उपलब्ध कराया जाएगा। तदनुसार सत्र 2007–08 से कक्षा 3 और 7 की पाठ्यपुस्तकों को राज्य के समस्त विद्यालयों में अध्ययन हेतु उपलब्ध कराया जा रहा है।

इस पुस्तक को अंतिम रूप देते समय संस्था के विशेषज्ञों ने क्षेत्र के विद्यालयों में भ्रमण कर विद्यार्थियों, शिक्षकों और भाषा के अन्य विशेषज्ञों से चर्चा की और विद्यार्थियों के ज्ञान के स्तर, शिक्षकों तथा समुदाय से प्राप्त सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए आवश्यक संशोधन, परिवर्तन किया है।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 बच्चों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने पर जोर देता है। एन.सी.ई.आर.टी. ,नई दिल्ली द्वारा कक्षा 1–8 तक के बच्चों हेतु कक्षावार, विषयवार अधिगम प्रतिफलों का निर्माण कर सुझावात्मक शिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है। जिससे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा। पुस्तकों में समयानुसार संशोधन तथा परिवर्धन एक निरंतर प्रक्रिया है। अतः सत्र 2018–19 हेतु पुस्तकों को समसामायिक तथा प्रासंगिक बनाया गया है। जिससे बच्चों को वांछित उपलब्धि प्राप्त करने के अधिक अवसर उपलब्ध होंगे। आशा है कि पुस्तकें शिक्षक साथियों तथा बच्चों को लक्ष्य तक पहुँचने में मददगार होंगी।

भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है–सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान, भाषा प्रयोग तथा सृजनात्मकता का विकास करना। इस पुस्तक में इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक के द्वारा हमने विद्यार्थियों को साहित्य की विभिन्न विधाओं–निबंध, कहानी, कविता, पत्र, आत्मकथा, एकांकी आदि से परिचित कराया है। साहित्य की इन विधाओं का परिचय उनकी अभिरुचि को परिष्कृत करके उनको श्रेष्ठ साहित्य के अध्ययन की ओर प्रेरित करेगा, यह हमारा विश्वास है।

इस पुस्तक में जिन विचारों और मानवीय मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें पारस्परिक सद्भाव, सामाजिक सहयोग, साहस, पर्यावरण चेतना को विशेष स्थान दिया गया है। पुस्तक को स्तरानुक्रम और रोचक बनाने में राज्य तथा राज्य के बाहर के अनेक शिक्षकों, विद्वानों, शिक्षाविदों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पाठों के चुनाव करने में हमें डॉ. हृदयकान्त दीवान विद्याभवन, उदयपुर, प्रो. रमाकान्त अग्निहोत्री दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली एवं पाठ आधारित अभ्यास के लिए अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन की विशेष रूप से मार्गदर्शन मिला है। परिषद् उनके बहुमूल्य सहयोग के लिए आभारी है। लेखक मण्डल के सदस्यों ने जिस कर्मठता और लगन से इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में जिन कवियों/लेखकों की रचनाएँ संगृहीत की गई हैं, हम उनके या उनके उत्तराधिकारियों के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, छ.ग. द्वारा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में दक्षता संवर्धन हेतु अतिरिक्त पाठ्य संसाधन उपलब्ध कराने की दृष्टि से Energized Text Books एक अभिनव प्रयास है, जिसे ऑन लाईन एवं ऑफ लाईन (डाउनलोड करने के उपरांत) उपयोग किया जा सकता है। ETBs का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त ऑडियो–वीडियो, एनीमेशन फॉरमेट में अधिगम सामग्री, संबंधित अभ्यास, प्रश्न एवं शिक्षकों के लिए संदर्भ सामग्री प्रदान करना है।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

संचालक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

छत्तीसगढ़, रायपुर

शिक्षकों से कुछ बातें

शिक्षक मित्रो, भारती 7 आपके हाथ में है। यों तो इसका प्रायोगिक संस्करण वर्ष–2005–06 में ही प्रकाशित हो गया था, किन्तु वह राज्य के कुछ सीमित विद्यालयों में ही प्रचलन में था। क्षेत्र–परीक्षण के दौरान विद्यार्थियों को आई कठिनाइयों को राज्य और राज्य के बाहर के शिक्षाविदों एवं राज्यस्तरीय पाठ्यपुस्तक समिति के सुझावों के उपरान्त उस संस्करण में आवश्यक संशोधन करके प्रस्तुत संस्करण का स्वरूप प्रदान किया गया है। फलस्वरूप वर्तमान संस्करण में आपको काफी परिवर्तन दिखाई पड़ेगा।

आपको बाल मनोविज्ञान के ज्ञाता हैं। आप जानते हैं कि बच्चा सीखने की क्षमता लेकर स्कूल आता है। 11–12 वर्ष की आयु में तो यह क्षमता चरम सीमा पर रहती है। वे अधिक–से–अधिक जानना चाहते हैं। आवश्यकता यह नहीं कि उन्हें विषय से सम्बन्धित जानकारी दी जाए, आवश्यकता इस बात की है कि उनकी समझने की शक्ति का भरपूर विकास हो। बच्चे पढ़कर स्वयं समझ सकें और सुनी व पढ़ी बातों की सार्थक विवेचना कर सकें। बोलने के साथ–साथ लिखने की भी उनकी क्षमता का विकास हो। बच्चे औपचारिक एवं अनौपचारिक संदर्भ में बातचीत करना सीख जाएँ, संदर्भानुसार लिखित व मौखिक भाषा का प्रयोग कर सकें, यह आपको परीक्षण करना है।

आपको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। प्रत्येक शिक्षक अपने –अपने ढंग से शिक्षण–पद्धति अपनाता है। शिक्षण की उसकी अपनी शैली होती है। फिर भी हम अपेक्षा करते हैं कि आप हमारे निम्नलिखित सुझावों पर विचार करेंगे। यदि आप इन सुझावों को उपयोगी समझें तो इन्हें अपनाएँगे।

1. पाठ की तैयारी– किसी पाठ को पढ़ाना प्रारंभ करने से पूर्व यह अधिक उचित है कि पाठ की पृष्ठभूमि का निर्माण करें। इससे विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता भी मिल जाती है। पाठ को प्रारंभ करने के पूर्व विद्यार्थियों से पाठ से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछिए जिनके उत्तरों से उनके पूर्व ज्ञान का भी पता चल जाए और उन्हें पाठ को समझने में भी सहायता मिले। उदाहरण के लिए 'रात का मेहमान' शीर्षक पाठ को पढ़ाने के पूर्व स्वाधीनता–संग्राम के संबंध में, क्रांतिकारी आन्दोलन के संबंध में, क्रांतिकारियों के संबंध में पूछें, चर्चा करें। 'सुभाषचंद्र बोस का पत्र' शीर्षक पाठ पढ़ाने के पूर्व नेताजी अैर लोकमान्य तिलक के संबंध में पूछें, चर्चा करें, बताएँ।

कविता के पाठ पढ़ाने के संबंध में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, निबंध, चरित्र आदि गद्य–पाठों से बिल्कुल भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को सौंदर्य–बोध और रसानुभूति कराना है। विद्यार्थी कविता पढ़कर आनंदित हों, साथ ही देश, प्रकृति, पशु–पक्षियों, उपस्थित मानकों आदि के प्रति उनके मन में सद्भावना और प्रेम पैदा हो।

2. नवीन शब्द परिचय– प्रायः सभी पाठों मे कुछ नवीन शब्दों का प्रयोग होता ही है। भाषा शिक्षण का यह एक उद्देश्य भी है कि प्रत्येक कक्षा मे विद्यार्थियों को कुछ नवीन शब्द अवश्य बताए जाएँ। बच्चों ने कोई नया शब्द सीख लिया है, यह हम तब कहेंगे जब वे उसका सही प्रयोग कर सकें। शब्द का अर्थ बताने के बाद अलग–अगल विद्याथियों से आप उसका प्रयोग कराएँ।

इस पुस्तक में शब्दार्थ पाठ के अंत में न देकर पुस्तक के अंत में शब्द–कोश के रूप में दिए गए हैं। इससे विद्यार्थियों को असली शब्द–कोश देखने की पद्धति ज्ञात होगी। पुस्तक के शब्द कोश की एक विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक वर्ण के बाद कुछ अलग शब्द दिए गए है, ये शब्द ऐसे हैं जिन्हें वे पूर्व की कक्षाओं में पढ़ चुके हैं, और उन्हें उन शब्दों का अर्थ मालूम है। इन शब्दों को क्रमानुसार लिखना है, साथ ही उनके अर्थ भी लिखने हैं। इसके लिए रिक्त स्थान छोड़े गए है। जहाँ आवश्यकता हो, आप विद्यार्थियों का मागदर्शन करें।

3. वाचन–वाचन की शुद्धता पर भी आपको ध्यान देना आवश्यक होगा। सब को यदि 'शब', 'छात्र' को 'क्षात्र' और 'कर्म' को 'क्रम' पढ़ा जाए तो समझने वाला क्या समझेगा? अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों का उच्चारण शुद्ध हो। हमारा सुझाव है कि विद्यार्थियों से वाचन कराने के पूर्व आप अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें, फिर विद्यार्थियों से अनुकरण वाचन कराएँ। इससे विद्यार्थियों को शब्दों के सही उच्चारण करने, बलाघात, विराम–चिह्नों के अनुसार पढ़ने में सहायता मिलेगी। कौन कितनी शीघ्रता से वाचन करता है, यह जाँच करना अच्छे वाचन का लक्षण नहीं माना जा सकता। वाचन कराते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि वाचन करने का अवसर समान रूप से सभी विद्यार्थियों को मिले। जो विद्यार्थी वाचन में पिछड़े हैं, उन्हें अन्य विद्यार्थियों के समकक्ष ले जाने का प्रयास करें। विद्यार्थियों को पठन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराएँ तथा पठन की पद्धतियों में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी करें।

4. विषयवस्तु– पाठ पढ़ाने के पश्चात् आपको यह देखना है कि विद्यार्थियों ने उस पाठ को कितना आत्मसात किया है। इसके लिए पुस्तक में विद्यार्थी द्वारा परस्पर पाठ पर आधारित मौखिक प्रश्न पूछने की विधि सुझाई गई है। इसके लिए विद्यार्थी एक–दूसरे समूह से प्रश्न पूछें, बाद में आप भी मौखिक प्रश्न पूछें। इससे जहाँ एक ओर विद्यार्थियों में मौखिक प्रश्न पूछने की दक्षता विकसित होगी, वहीं विषय– वस्तु को समझने में भी उन्हें सहायता मिलेगी।

5. भाषा– भाषा संबंधी दक्षताओं के विकास के लिए पाठ्यपुस्तक में पर्याप्त अभ्यास दिए गए हैं। आप ऐसे कुछ अन्य अभ्यास देकर उनकी दक्षताओं को विकसित कर सकते हैं।

6. योग्यता विस्तार के क्रियाकलाप– भाषा ज्ञान, एकाकी न रहे, इसके लिए आवश्यक है कि भाषायी योग्यता के साथ अन्य विषयों से उसका संबंध स्थापित किया जाए। इसके लिए योग्यता विस्तार शीर्षक में कुछ क्रियाकलाप सुझाए गए हैं। समय–समय पर कक्षा में वादविवाद प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, चित्र निर्माण की प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, ऐतिहासिक या मनोरंजक स्थलों का भ्रमण कराके उनके संबंध मे लेख–लिखना आदि क्रियाकलापों से विद्यार्थियों के भाषायी कौशल में अभिवृद्धि हो सकती है।

7. इस पुस्तक में हमने शब्द–कोश के रूप में शब्दार्थ दिए हैं बीच–बीच में कुछ रिक्त स्थान छोड़े गए हैं जिनमें चौखाने में से शब्द छाँटकर उचित स्थान पर भरने हैं। विद्यार्थी इस गतिविधि को गंभीरता–पूर्वक करें– यह देखना आपका उत्तरदायित्व है। ऐसे शब्दों के अर्थ यदि उन्हें न आएँ तो आप बता सकते हैं।

आप सबको अध्यापन करने का लंबा अनुभव है। आपके इस लंबे अनुभव से विद्यार्थी निस्संदेह लाभान्वित होते हैं। हमारे बताए हुए उपर्युक्त सुझावों पर अमल करने से हो सकता है आपकी शिक्षण–कला में इससे कुछ लाभ हो। यदि ऐसा हुआ तो हम अपने प्रयास को सार्थक समझेंगे।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

विषय–सूची

क्र.	पाठ	विधा	रचयिता	पृष्ठ
1.	कुछ और भी दूँ	कविता	श्री रामावतार त्यागी	1–3
2.	प्रेरणा के पुष्प	प्रेरक प्रसंग	लेखक –मंडल	4–7
3.	विद्रोही शक्तिसिंह	कहानी	श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'	8–13
4.	मौसी	कहानी	श्री भीष्म साहनी	14–19
5.	सरद रितु आ गे	कविता	पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'	20–22
6.	सदाचार का तावीज़	व्यंग्य	श्री हरिशंकर परसाई	23–28
7.	रात का मेहमान	चरित्र	संकलित	29–34
8.	भिखारिन	कहानी	गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगाोर	35–42
9.	त्याग मूर्ति ठाकुर प्यारेलाल	जीवनी	लेखक–मंडल	43–47
10.	सितारों से आगे	चरित्र	लेखक–मंडल	48–52
11.	कोई नहीं पराया	कविता	श्री गोपालदास 'नीरज'	53–56
12.	प्रेरणा स्रोत मेरी माँ	प्रेरक प्रसंग	लेखक–मंडल	57–61
13.	सुभाषचन्द्र बोस का पत्र	पत्र	नेताजी सुभाष चन्द्र बोस	62–66
14.	भारत बन जाही नंदनवन	कविता	श्री कोदूराम 'दलित'	67–69
15.	शतरंज में मात	एकांकी	श्रीयुत् श्रीप्रसाद	70–78
16.	काव्य–माधुरी	कविता	सूर,तुलसी,मीरा,रसखान, धरमदास	79–82
17.	वर्षा बहार	कविता	श्री मुकुटधर पाण्डेय	83–85
18.	मितानी	लोककथा	लेखक–मंडल	86–89
19.	शहीद बकरी	कहानी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	90–93
20.	लक्ष्य–बेध	निबंध	श्री रामनाथ 'सुमन'	94–98
21.	सुवागीत	निबंध	लेखक–मंडल	99–103
22.	सुब्रह्मण्य भारती	चरित्र	लेखक–मंडल	104–110
	शब्दकोश			111–122

4Y8GS8

नोट– क्रमांक – 5, 9, 14, 18, 21 छत्तीसगढ़ी पाठ है।

पाठ 1

कुछ और भी दूँ

—श्री रामावतार त्यागी

4YHCTV

राष्ट्रीय भावों से ओत–प्रोत यह कविता बच्चों के कोमल मन में स्वदेश प्रेम की भावना को सहज ही जागृत करती है। कवि देश के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने को प्रस्तुत है, पर इतने से ही उनका मन संतुष्ट नहीं होता। कवि–मन में हर पल राष्ट्र के लिए कुछ और भी अर्पित करने की उत्कट चाहत है। स्वयं को अकिंचन मानते हुए भी कवि अपने हर भाव, चाहत और अपनी हर चेष्टा को राष्ट्र माता के चरणों में समर्पित करने को कृत संकल्पित है और देशवासियो को भी प्रेरित करते हैं।

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब,
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

भाँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,

स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार–घर–आँगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बायें हाथ में ध्वज को थमा दो।

ये सुमन लो, यह चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर क्यों करना चाहता है ?
2. माँ के किस ऋण की बात कवि कहते हैं ?
3. कुछ और देने की चाहत कवि को क्यों है ?
4. कवि स्वयं को अकिंचन क्यों कह रहे हैं ?
5. क्या स्वीकार करने का आग्रह कवि राष्ट्र माँ से कर रहे हैं ?
6. चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ– पंक्तियों के माध्यम से कवि किन भावों को व्यक्त करना चाहते हैं?

पाठ से आगे

1. स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित आयु का क्षण–क्षण समर्पित –

   इस कविता को पढ़ने के बाद आपको क्या महसूस होता है? यह कविता पाठ की अन्य कविताओं जैसी है या उससे अलग है। अपने शब्दों में लिखिए।
2. इस कविता में कवि राष्ट्र के प्रति अपना सब कुछ अर्पित करने की बात करता है। क्या आपको लगता है कि हमारे आस–पास के लोग इसके लिए तैयार हैं ? लिखिए
3. अपनी माँ और राष्ट्र माता में आपको क्या फर्क लगता है ? अगर हम सब अपनी माँ के सम्मान के प्रति उत्तरदायी हैं, तो स्वाभाविक रूप से राष्ट्र माता के प्रति भी हम समर्पित होंगे। विचार कर लिखिए।
4. राष्ट्र के प्रति हमारे समर्पण में बाधक तत्व आपको क्या लगते हैं ? साथियों के साथ विचार कर अपनी समझ को लिखिए।

4YR8VI

भाषा से

1. इस कविता में बहुत से तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे – ऋण, अकिंचन, भाल, अर्पण, चरण, ध्वज, सुमन, नीड़, तृण इन शब्दों का छतीसगढ़ी भाषा में क्या प्रयोग प्रचलित है उन्हें खोज कर वाक्य में प्रयोग कीजिए।
2. निम्नलिखित शब्दों के सही रूप को छांट कर लिखिए–

   न्यौछावर / न्योछावर,आशीश / आशीष, अकिंचन / अकीन्चन, सवीकार / स्वीकार, स्वाभाविक / स्वभाविक, आसय / आशय, अनुपरास / अनुप्रास, कृतज्ञ / क्रतग्य।
3. प्रस्तुत कविता में तुक के रूप में त, न और र वर्ण का बार–बार दुहराव देखने को मिलता है। जहाँ वर्णों की बार–बार आवृत्ति होती है उसे हम अनुप्रास अलंकार कहते हैं।

   जैसे– गान अर्पित, प्राण अर्पित।

   रक्त का कण– कण समर्पित।

   पंक्ति में त वर्ण का दुहराव देख जा सकता है। पाठ में ऐसे अन्य पंक्तियों को ढूंढें जहाँ अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ हो।

योग्यता विस्तार

1. 'राष्ट्र के प्रति नागरिक के क्या कर्तव्य हैं' इस विषय पर कक्षा में विचार कर मुख्य बिन्दुओं को लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।
2. आशा का दीप–(दिनकर), सारे जहाँ से अच्छा–(इकबाल), आदि देशभक्ति पूर्ण कविताओं को खोज कर पढ़िए।

4ZIH1G

पाठ 2

प्रेरणा के पुष्प

– लेखक–मण्डल

मनुष्य होने का सहज बोध यह है कि हम ऐसे कार्य करें जिससे अधिक से अधिक लोगों को सुख और आनंद की अनुभूति हो। प्रस्तुत पाठ के दृष्टांत इन्हीं मानवीय भावानुभूतियों को सहज रुप में व्यक्त करते हैं। बुजुर्ग अगली पीढ़ी के लिए फलदार वृक्षों के बीज बोते हैं वहीं एक बुजुर्ग स्त्री अंजान राहों में सुंदर पुष्पों, छायादार वृक्षों के बीज इस उम्मीद में बिखेरती चलती हैं कि वह रहे न रहे आने वाली पीढियों को इन पुष्पों और वृक्षों के उगने से सुगंध और शीतलता मिलेगी। विवेकानंद और बेंजामिन फ्रेंकलिन के जीवनानुभव के प्रसंग मानव जीवन की इसी सार्थकता को संपूर्णता के साथ प्रेरित और आशान्वित करते हैं।

(1)

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफेद हो गए थे, जमीन खोद रहा था। एक नौजवान ने उस बुजुर्ग को परिश्रम करते देखकर पूछा, "बाबा, यह क्या कर रहे हो?"

"आम का पौधा रोप रहा हूँ–" बूढ़े ने कहा।

"इस उम्र में? इसके फल कब खाओगे, बाबा?"

"मैं फल नहीं खा सकता, तो क्या हुआ बेटे, तुम तो खा सकोगे न? मेरे–तुम्हारे नाती–पोते तो खाएँगे? देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगाई थी, तो उसके फल मैंने खाए। मैं यह आम का पौधा लगा रहा हूँ। इसके फल मेरे नाती–पोते खाएँगे।"

(2)

एक वृद्ध महिला रेलगाड़ी से सफर कर रही थी। खिड़की के पास बैठकर बीच–बीच में, अपनी मुट्ठी से कुछ बाहर फेंकती जा रही थी। एक सहयात्री ने पूछा, "यह आप क्या फेंक रही हैं ?" उस

महिला ने जवाब दिया, "ये सुंदर फूलों और फलों के बीज हैं। मैं इन्हें इस उम्मीद से फेंक रही हूँ कि इनमें से कुछ भी अगर जड़ पकड़ लें तो लोगों को इनसे कुछ फायदा होगा। पता नहीं, मैं इस रास्ते से फिर गुजरूँ या न गुजरूँ, इसलिए क्यों न मैं इस अवसर का उपयोग कर लूँ?"

(3)

अमेरिका के वैज्ञानिक, बेंजामिन फ्रेंकलिन, के बारे में एक अनुकरणीय बात सुनी जाती है। उनके पास एक गरीब विद्यार्थी मदद माँगने के लिए आया। उसे उन्होंने बीस डालर दिए। वे तो यह छोटी–सी रकम देकर भूल गए, लेकिन वह विद्यार्थी इस उपकार को न भूला। जब उसके दिन फिरे, तब वह बीस डालर लौटाने के लिए फ्रेंकलिन के पास आया। फ्रेंकलिन ने कहा, "मुझे याद तो नहीं कि मैंने यह रकम आपको कब दी थी। खैर, आप इसे अपने ही पास रखिए और जब आपके पास कोई ऐसा ही जरूरतमंद आए तो उसे यह दे दीजिए।" उस व्यक्ति ने ऐसा ही किया।

कहते हैं, आज भी वह रकम अमेरिका में जरूरतमंदों के हाथों में घूम रही है।

(4)

स्वामी विवेकानंद बेलूर मठ के निर्माण–कार्य और शिक्षादान के कार्य में बहुत व्यस्त थे। निरन्तर भाग–दौड़ और कठिन श्रम करने के कारण वे अस्वस्थ हो गए थे। चिकित्सकों ने उन्हें वायु–परिवर्तन तथा विश्राम करने पर जोर दिया। विवश होकर वे दार्जिलिंग चले गए। वहाँ उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा था। तभी उन्हें समाचार मिला कि कोलकाता में प्लेग व्यापक रूप से फैल गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो रही है। यह दुखद समाचार सुनकर क्या महाप्राण विवेकानंद स्थिर रह सकते थे ? वे तुरन्त कोलकाता लौट आए और उसी दिन उन्होंने प्लेग रोग में आवश्यक सावधानी बरतने का जनसाधारण को उपदेश दिया। अपने साथ तमाम संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को लेकर वे रोगियों की सेवा में जुट गए। कोलकाता में भय तथा आतंक का राज्य फैला था। स्त्री–पुरुष अपने बच्चों को लेकर प्राण बचाने के उद्देश्य से भागे जा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने प्लेग रोग के बचाव के संबंध में कठोर नियम जारी कर दिया था। उससे लोगों में भारी असंतोष था। इस परिस्थिति का सामना करने की भारी चुनौती स्वामी जी के सामने थी। इस कार्य में कितने ध न की आवश्यकता होगी और वह कहाँ से आएगा, इस बात की चिन्ता करते हुए किसी गुरुभाई ने स्वामी जी से प्रश्न किया, "स्वामी जी, रुपये कहाँ से आएँगे?" स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया, "यदि आवश्यकता हुई तो मठ के लिए खरीदी गई जमीन बेच डालेंगे। हजारों

स्त्री–पुरुष हमारी आँखों के सामने असहनीय दुःख सहन करेंगे और हम मठ में रहेंगे ? हम सन्यासी हैं, आवश्यकता होगी तो फिर वृक्षों के नीचे रहेंगे, भिक्षा द्वारा प्राप्त अन्न–वस्त्र हमारे लिए पर्याप्त होगा।"

स्वामी जी ने एक बड़ी–सी जमीन किराये पर ली और वहाँ पर कुटियाँ निर्माण की गईं। जाति व वर्ण–विचार छोड़, असहाय प्लेग के मरीजों को वहाँ पर लाकर उत्साही कार्यकर्त्तागण सेवा–कार्य में रत हुए। स्वामी जी स्वयं भी उपस्थित रहकर सेवा–कार्य करने लगे। शहर की गंदगी साफ करने में, औषधियों का वितरण करने में, दरिद्र नारायणों की अति उत्साह से सेवा करने में, सभी कार्यकर्त्ता सच्चे मन से लग गए। 'यत्र जीव तत्र शिव' मंत्र के ऋषि विवेकानंद मृत्यु की कुछ भी परवाह न करते हुए स्वदेशवासियों को शिक्षा देने लगे कि किस प्रकार नर को नारायण मान सेवा करना योग्य है। जिन डोम–चण्डाल, मोची आदि से सदियों से तथाकथित ऊँची जाति के अभिमानी जन घृणा करते थे, स्वामी जी ने उन्हीं को 'मेरे भाई' कहकर उनका आलिंगन किया।

टिप्पणी

डोम – भारतवर्ष की एक अनुसूचित जाति। कभी ये लोग ही श्मशान में चिता जलाने का काम करते थे।

अभ्यास

पाठ से

1. बुजुर्ग को परिश्रम करते देख कर उनसे नौजवान के क्या सवाल थे ?
2. रेल से सफर करती बुजुर्ग महिला मुट्ठी से बाहर क्या बिखेर रही थी और क्यों ?
3. अमरीकी वैज्ञानिक फ्रेंकलिन बेंजामिन के बारे में अनुकरणीय बात क्या सुनी जाती है ?
4. महाप्राण विवेकानन्द क्यों अस्थिर चित्त हो गए ?
5. विवेकानन्द ने सन्यासी जीवन के बारे में क्या बताया ?
6. अपने काम से विवेकानन्द स्वदेशवासियों को क्या शिक्षा देने लगे ?
7. प्लेग पीड़ितों की सहायता के लिए विवेकानन्द ने क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. आपके आस–पास ऐसे लोग होंगे जो दूसरों की सेवा के लिए बार–बार प्रयास करते हैं ऐसे लोगों क बारे में पता कर लिखिए।
2. पाठ का शीर्षक 'प्रेरणा के पुष्प' रखा गया है ? इस पाठ को पढ़ने से आपको क्या अनुभूति हुई दस पंक्तियों में लिखने का प्रयास कीजिए।

4ZSS34

3. बुजुर्ग व्यक्ति अपनी आने वाली पीढ़ी के प्रति कितने संवेदनशील होते हैं यह पाठ से पता चलता है। आपके आस–पास के बुजुर्ग क्या चाहते हैं ? इस पर उनसे बातचीत कर उन्हें संक्षेप में लिखिए।
4. किसी बुजुर्ग व्यक्ति के प्रति हम नई पीढ़ी के लोगों का क्या कर्तव्य होना चाहिए ? मित्रों से इस विषय पर बातचीत कर अपने विचार रखिए।
5. पाठ में 'जाति सूचक' शब्द का प्रयोग देखने को मिलता है। क्या आपको लगता है कि कहीं से भी, ऐसे प्रयोग मानवीय समानता या किसी सभ्य समाज का बोध कराते है। आपस में विचार कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में 'सहयात्री' शब्द का अर्थ है साथ–साथ यात्रा करनेवाला, इस शब्द का निर्माण 'यात्री' में 'सह' शब्द को जोड़कर बनाया गया है इसी तरह से आप 'सह' शब्द को जोड़कर कुछ अन्य शब्दों का निर्माण कीजिए।

2. पाठ में सफेद बाल, वृद्ध महिला, सुंदर फूल, गरीब विद्यार्थी, अनुकरणीय व्यक्ति, असहनीय दुःख, असहाय मरीज आदि शब्द विशेषण और विशेष्य के उदाहरण है इसमें से विशेष्य और विशेषण को पहचान कर लिखिए और पाठ में प्रयुक्त हुए ऐसे ही शब्द प्रयोग को खोजकर लिखिए।
3. पाठ में इस तरह के प्रयोग आप देख सकते हैं **जिनके** बाल, **उस** बुजुर्ग, **इस** उम्र, **इस** उम्मीद, **इस** रास्ते, **यह** छोटी रकम, रेखांकित शब्दों को हम सार्वनामिक विशेषण कहते हैं, अर्थात यहां पर सर्वनाम शब्द संज्ञा या सर्वनाम के संकेत या निर्देश के रूप में आये हैं अतः सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण हैं। पाठ से इस प्रकार के सार्वनामिक विशेषण के उदाहरण ढूंढ़ कर लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. बुजुर्गों को किस प्रकार की उपेक्षा और अपमान, आज हमारे समाज में सहना पड़ता है और क्यों ? इस विषय पर विद्यालय स्तर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन कीजिए।
2. विवेकानन्द के जीवन और उनके कार्यों के बारे में पुस्तकालय से उनकी जीवनी अथवा जीवन के कुछ प्रसंगों को खोज कर पढ़िए और साथियों के साथ चर्चा कीजिए।

●●●

5CPSLY

पाठ 3

विद्रोही शक्तिसिंह

—श्री विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

दो ऐतिहासिक पात्रों के माध्यम से कहानीकार ने भाई—भाई के संबंधों के प्रेम, प्रतिशोध, अन्तर्द्वन्द्व, ग्लानि भाव और भावनाओं के आवेग को कुशलता के साथ चित्रित किया है। एक छोटे से मुद्दे पर महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह में मतभेद होता है। अपमान से आहत और प्रतिशोध भाव से भरा हुआ शक्ति सिंह क्रोध के आवेग में चित्तौड़ छोड़कर आगरा अकबर के शरण में चला जाता है। उसके मन में महाराणा प्रताप से बदला लेने की बलवती आकांक्षा है। मुगल और राजपूतों के मध्य युद्ध में शक्ति, अकबर की ओर से लड़ रहा होता है। राजपूतों की पराजय के मध्य जब महाराणा सेनानायकों के दबाव में युद्ध के मैदान से सकुशल निकल जाने को बाध्य किये जाते हैं तो शक्ति सिंह इस रणनीति को ताड़ लेता है और बदला लेने का उपयुक्त अवसर समझ अपने घोड़े को महाराणा के पीछे लगा देता है। रास्ते में वीर राजपूत योद्धाओं के मातृभूमि पर बलिदान और उत्सर्ग देखकर शक्ति सिंह का हिंसा भाव ग्लानि से भर उठता है। महाराणा के समक्ष नतमस्तक बच्चों की तरह फूट—फूट कर रोता हुआ वीर शक्ति, भाई के चरणों में अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित्त करने का आदेश मांगता है। इस कहानी का एक और सबल पक्ष है शक्ति सिंह की पत्नी की भावनाओं की जीत है।

"मान जाओ, तुम्हारे उपयुक्त यह कार्य न होगा।"

"चुप रहो, तुम क्या जानो?"

"इसमें वीरता नहीं, अन्याय है।"

"बहुत दिनों की धधकती हुई ज्वाला आज शान्त होगी—" शक्तिसिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी और अपनी पत्नी की ओर देखा।

"छी—छी, कलंक लगेगा, अपराध होगा।"

"अपमान का बदला लूँगा। प्रताप के गर्व को मिट्टी में मिला दूँगा। आज मैं विजयी होऊँगा—" बड़ी दृढ़ता से कहकर शक्तिसिंह ने शिविर के द्वार पर से देखा। मुगल—सेना के चतुर सिपाही अपने—अपने घोड़ों की परीक्षा ले रहे थे। धूल उड़ रही थी। बड़े साहस से सब एक—दूसरे में उत्साह भर रहे थे।

"निश्चय ही महाराणा की हार होगी। बाईस हजार राजपूतों को दिन—भर में मेरे द्वारा बुलाई गई मुगल सेना काटकर सूखे डंठल की भाँति गिरा देगी" — साहस से शक्तिसिंह ने कहा।

"भाई पर क्रोध करके देशद्रोही बनोगे ....." कहते–कहते उस राजपूत बाला की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं।

शक्तिसिंह अपराधी की तरह विचार करने लगा। जलन का उन्माद नस–नस में दौड़ रहा था। प्रताप के प्राण लेकर ही छोड़ूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा उसने की थी। नादान दिल किसी तरह न मानेगा। उसे कौन समझा सकता था ?

रणभेरी बजी। कोलाहल मचा। मुगल सैनिक मैदान में एकत्रित होने लगे। पत्ता–पत्ता खड़खड़ा उठा।

बिजली की भाँति तलवारें चमक रही थीं। उस दिन सबमें उत्साह था। युद्ध के लिए भुजाएँ फड़कने लगीं।

शक्तिसिंह ने घोड़े की लगाम पकड़कर कहा– "आज अंतिम निर्णय है, मरूँगा या मारकर ही लौटूँगा।"

शिविर के द्वार पर खड़ी मोहिनी अपने भविष्य की कल्पना कर रही थी। उसने बड़ी गंभीरता से कहा – "ईश्वर आपको सद्बुद्धि दे, यही प्रार्थना है।"

एक महत्त्वपूर्ण अभियान के विध्वंस की तैयारी थी। प्रकृति काँप उठी। घोड़े और हाथियों के चीत्कार से आकाश थरथरा उठा। बरसाती हवा के थपेड़ों से जंगलों के वृक्ष रणनाद करते हुए झूम रहे थे। पशु–पक्षी भय से त्रस्त होकर आश्रय ढूँढने लगे। बड़ा प्रतिकूल और विकट समय था।

उस भयानक मैदान में राजपूतसेना मोर्चाबंदी कर रही थी। हल्दीघाटी की ऊँची चोटियों पर भील लोग धनुष चढ़ाए उन्मत्त खड़े थे।

"महाराणा की जय !" शैलमाला से टकराती हुई ध्वनि मुगल–सेनाओं में घुस पड़ी। युद्ध आरंभ हुआ। भैरवी रणचंडी ने प्रलय का राग छेड़ा। मनुष्य हिंसक जंतुओं की भाँति, अपने–अपने लक्ष्य पर टूट पड़े। सैनिकों के निडर घोड़े हवा में उड़ने लगे।

तलवारें चमकने लगीं। पर्वतों के शिखरों पर से विषैले बाण मुगलसेना पर बरसने लगे। सूखी हल्दीघाटी में रक्त की धारा बहने लगी।

महाराणा आगे बढ़े। शत्रुसेना का व्यूह टूटकर तितर–बितर हो गया। दोनों ओर के सैनिक कट–कटकर गिरने लगे। देखते–देखते लाशों के ढेर लग गए।

भूरे बादलों को लेकर आँधी आई। सलीम के सैनिकों को बचने का अवसर मिला। मुगलों की सेना में नया उत्साह भर गया। तोप के गोले उथल–पुथल करने लगे। धाँय–धाँय करती बंदूकों से निकली हुई गोलियाँ दौड़ रही थीं। ओह ! जीवन कितना सस्ता हो गया था।

महाराणा शत्रुसेना में सिंह की भाँति उन्मत्त होकर घूम रहे थे। जान की बाजी लगी थी।

वे सब तरफ से घिरे थे; हमला–पर–हमला हो रहा था। राणा संकट में पड़े थे। बचना कठिन था। सात बार घायल होने पर भी पैर उखड़े नहीं, मेवाड़ का सौभाग्य इतना दुर्बल नहीं था।

मानसिंह की कुमंत्रणा सत्य सिद्ध होनेवाली थी। ऐसे आपत्तिकाल में वह वीर सरदार सेना सहित वहाँ कैसे आया ? आश्चर्य से महाराणा ने उसकी ओर देखा और मन्ना जी ने उनके मस्तक से मेवाड़ के राजचिह्न को उतारकर स्वयं धारण कर लिया। राणा ने आश्चर्य और क्रोध से पूछा–"अरे! यह क्या?"

"आज मरने के समय एक बार राजचिह्न धारण करने की बड़ी इच्छा हुई है–" हँसकर मन्ना जी ने कहा। राणा ने उसकी उन्मादपूर्ण हँसी में अटल धैर्य देखा।

मुगलों की सेना में से शक्तिसिंह इस चातुरी को समझ गया। उसने देखा, घायल प्रताप रणक्षेत्र से जीते–जागते निकले चले जा रहे हैं और वीर मन्ना जी को प्रताप समझकर मुगल उधर ही टूट पड़े हैं। उसी समय दो मुगल सरदारों के साथ महाराणा के पीछे–पीछे शक्तिसिंह ने अपना घोड़ा छोड़ दिया।

खेल समाप्त हो रहा था। स्वतंत्रता की बलि–वेदी पर सन्नाटा छा गया था। जन्मभूमि के चरणों पर मर मिटनेवाले वीरों ने अपने को उत्सर्ग कर दिया था। बाईस हजार राजपूत वीरों में से केवल आठ हजार बच गए थे।

विद्रोही शक्तिसिंह चुपचाप सोचता हुआ अपने घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा था। मार्ग में शव कटे पड़े थे – कहीं भुजा शरीर से अलग पड़ी थी; कहीं धड़ कटा हुआ था; कहीं खून से लथपथ मस्तक भूमि पर गिरा हुआ था। कैसा परिवर्तन है ! दो घड़ियों में हँसते–बोलते और लड़ते हुए जीवित पुतले कहाँ चले गए? ओह! ऐसे निरीह जीवन पर इतना गर्व !

शक्तिसिंह की आँखें ग्लानि से छलछला गईं। "ये सब भी राजपूत थे। मेरी ही जाति के खून थे। हाय रे मैं ! मेरा प्रतिशोध पूरा हुआ–क्या सचमुच पूरा हुआ ? नहीं, यह प्रतिशोध नहीं, अधम शक्ति ! यह तेरे चिरकाल के लिए पैशाचिक आयोजन था। तू भला पागल, तू प्रताप से बदला लेना चाहता था। उस प्रताप से जो अपनी स्वर्गादपि गरीयसी जननी जन्मभूमि की मर्यादा बचानेवाला था; वह जन्मभूमि, जिसके अन्न–जल से तेरी नसें भी फूली–फली हैं। अब भी माँ की मर्यादा का ध्यान कर।"

सहसा धाँय–धाँय गोलियों का शब्द हुआ। चौंककर शक्तिसिंह ने देखा। दोनों मुगल प्रताप का पीछा कर रहे थे। महाराणा का घोड़ा लस्त–पस्त होकर झूमता हुआ गिर रहा था। अब भी समय है। शक्तिसिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी।

फिर एक आवाज़ हुई – "रुको।"

दूसरे क्षण शक्तिसिंह की बन्दूक छूटी। पलक मारते दोनों मुगल सरदार जहाँ–के–तहाँ ढेर हो गए। महाराणा ने क्रोध से आँखें चढ़ाकर देखा। वे आँखें पूछ रही थीं, "क्या मेरे प्राण पाकर निहाल हो जाओगे ? इतने राजपूतों के खून से भी तुम्हारी हिंसा तृप्त नहीं हुई ?"

किन्तु यह क्या ? शक्तिसिंह तो महाराणा के सामने नतमस्तक खड़ा था। वह बच्चों की तरह फूट–फूटकर रो रहा था। शक्तिसिंह ने कहा–"नाथ! सेवक अज्ञान में भूल गया था। आज्ञा हो तो इन चरणों पर अपना शीश चढ़ाकर प्रायश्चित कर लूँ।"

राणा ने अपनी दोनों बाँहें फैला दीं। दोनों के गले आपस में मिल गए, दोनों की आँखें स्नेह की वर्षा करने लगीं। दोनों के हृदय गद्‌गद् हो गए।

इस शुभ मुहूर्त पर पहाड़ी वृक्षों ने पुष्पवर्षा की, नदी की कल–कल धारा ने वंदना की।

प्रताप ने उन डबडबाई हुई आँखों से ही देखा–उनका चिर सहचर प्यारा 'चेतक' दम तोड़ रहा है। सामने ही शक्तिसिंह का घोड़ा तैयार है।

शक्तिसिंह ने कहा–"भैया ! अब आप विलंब न करें, घोड़ा तैयार है।"

राणा शक्तिसिंह के घोड़े पर सवार होकर, उस दुर्गम मार्ग को पार करते हुए निकल गए। श्रावण का महीना था।

दिनभर की मारकाट के पश्चात् रात्रि बड़ी सुनसान हो गई थी। शिविरों में से महिलाओं के रुदन की करुण ध्वनि हृदय को हिला देती थी।

हजारों सुहागिनों के सुहाग उजड़ गए थे। उन्हें कोई ढाढ़स बँधानेवाला न था। था तो केवल हाहाकार, चीत्कार, कष्टों का अम्बार। शक्तिसिंह अभी तक अपने शिविर में नहीं लौटा था। उसकी पत्नी भी प्रतीक्षा में विकल थी। उसके हृदय में जीवन की आशा–निराशा क्षण–क्षण उठती–गिरती थी।

अँधेरी रात में काले बादल आकाश में छा गए थे। एकाएक उस शिविर में शक्तिसिंह ने प्रवेश किया। उसके कपड़े खून से तर थे। पत्नी ने कौतूहल से देखा।

"प्रिये !"

"नाथ !"

"तुम्हारी मनोकामना पूर्ण हुई, मैं प्रताप के सामने परास्त हो गया।"

अभ्यास

पाठ से

1. शक्ति सिंह कौन था उसने क्या प्रतिज्ञा की थी ?
2. राजपूत बाला की आँखों से चिंगारियाँ क्यों निकलने लगी ?
3. महाराणा प्रताप से शक्ति सिंह की अनबन क्यों हुई ?
4. शक्ति सिंह का अंतिम निर्णय क्या था ?
5. मानसिंह की कुमंत्रणा क्या थी ?
6. मन्ना जी ने मेवाड़ का राज चिह्न अपने मस्तक क्यों धारण किया ?
7. शक्ति सिंह की आँखें ग्लानि से क्यों छलछला गईं ?
8. युद्ध अथवा उस मारकाट के क्या परिणाम हुए ?

पाठ से आगे

1. पाठ में महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह दो चरित्र हैं। दोनों को पढ़ते हुए कौन से चरित्र आपको आकर्षित करते हैं ? विचार कर लिखिए।
2. अगर शक्ति सिंह ने महाराणा प्रताप का पीछा न किया होता तो उसका क्या परिणाम होता? साथियों के साथ विचारकर लिखिए।

5CYNNL

3. शक्ति सिंह की पत्नी मोहिनी के भाव को समझते हुए उसकी चारित्रिक विशेषताओं को परस्पर बातचीत कर लिखिए।
4. दो भाइयों के संबंधों को हम कहानी में देखते हैं। हमारे आस–पास के परिवेश में भाई–भाई के संबंधों को देखकर क्या महसूस करते हैं ? आपस में बात कर लिखिए।

भाषा से

1. पाठ में आए हुए निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–

5D8JQ9

क. शक्ति सिंह ने एक लम्बी साँस फेंकी **और** अपनी स्त्री की ओर देखा।

ख. शक्ति सिंह के हृदय में भाई की ममता उमड़ पड़ी, **फिर** एक आवाज आई– रुको।

उपर के उदाहरण (क) में वाक्य 'और' (ख) में 'फिर' के द्वारा जुड़ते हैं जिन्हें हम समुच्चय बोधक अव्यय कहते हैं। दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को जोड़ने का कार्य करने वाले अव्यय समुच्चयबोधक अव्यय कहे जाते हैं। आप समुच्चय बोधक अव्यय के पाँच उदाहरण बनाएँ।

2. पाठ में इन शब्दों के प्रयोग को आप देख सकते हैं –भूरे बादल, उन्मादपूर्ण हँसी, अटल धैर्य, नया उत्साह, विकट समय, सस्ता जीवन, प्रलय राग ये प्रयोग विशेषण–विशेष्य के उदाहरण हैं। पाठ से आप इसी प्रकार के अन्य उदाहरण को खोज कर लिखिए और विशेष्य तथा विशेषण को चिह्नित कीजिए।

3. पाठ में बहुत से स्थानों पर योजक चिह्न (–) का प्रयोग किया गया है। पाठ से इन्हें खोजकर लिखिए और योजक चिह्न का प्रयोग कहाँ होता है इसे किताब में से ढूँढ़ कर पढ़िए और समझिए।

योग्यता विस्तार

1. हल्दीघाटी कहाँ पर है और क्यों प्रसिद्ध है ? शिक्षक से बातचीत कर इस विषय पर एक निबंध लिखिए।

2. इस कहानी को एक छोटे से नाटक के रूप में परिणित कर उसका मंचन कीजिए।

●●●

5DRBTJ

पाठ 4

मौसी

– श्री भीष्म साहनी

प्रस्तुत कहानी एक स्त्री के मानवीय लगाव और स्वभाव के उदात्त स्वरूप का वर्णन है, जो सबके सुख–दुःख में अपनी पहल और प्रतिबद्धता के साथ शामिल होती है। वह बड़ों के लिए ही नहीं बच्चों के साथ भी उनके खेल, खिलौने और कथा संसार के आनंदमयी पूरी दुनियां में शामिल रहती है। लेकिन सबके काम आनेवाली 'मौसी' जब बीमार पडती है तो उसके साथ किस प्रकार उपेक्षा का व्यवहार होता है? जानना कारुणिक लगता है। बच्चों की आत्मीयता और रागात्मक भाव मौसी के इस एहसास को जागृत कर देते हैं जिसमें मौसी बेहद विश्वास के साथ कहती है कि 'अब मैं मर भी जाऊं तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी'।

उसे सब मौसी कहकर पुकारते थे; बच्चे भी और बड़ी उम्र के लोग भी। किसी के घर बच्चा बीमार होता, तो सबसे पहले मौसी को ही बुलाया जाता। किसी के घर शादी होती, तो वहाँ भी सबसे पहले मौसी ही पहुँचती। दिनभर मुहल्ले में कभी एक के घर, तो कभी दूसरे के घर मौसी बैठी नजर आती।

कभी किसी घर के आँगन में बैठी लड़की के बाल काढ़ रही होती; कभी किसी के घर की छत पर शलजम की कतलियाँ सूखने के लिए डाल रही होती।

जब चंदू की बहिन की शादी हुई, तो मौसी दिनभर दुल्हन की हथेलियों पर मेंहदी के बेल–बूटे बनाती रही।

एक दिन आँगन में बैठी मौसी, नीले रंग के पल्ले पर झिलमिलाते सितारे टाँक रही थी। हम बच्चों से बोली– "आओ, तुम्हें सितारों जड़ा आसमान दिखाऊँ।" कहकर उसने हमारे सामने पल्ला बिछा दिया। सचमुच हमें लगा जैसे तारों से झिलमिलाता आकाश हमारे सामने फैल गया हो।

बड़ी बहिन सुनाती थी कि पहले मौसी तीज–त्योहार के मौके पर नाचा भी करती थी; तरह–तरह के स्वाँग भरती। पर अब वह कुछ–कुछ बुढ़ा गई थी।

मौसी कौन थी, कहाँ से आई थी, कोई नहीं जानता था। किसी को यह भी मालूम नहीं था कि वह रहती कहाँ है। एक बार माँ ने मुझसे कहा– "जा, मौसी को बुला ला।" मैंने पूछा– "कहाँ मिलेगी?" माँ बोली– "मुहल्ले में ही कहीं मिलेगी।" यह भी कोई नहीं जानता था कि मौसी कब उस मुहल्ले में आई थी। बच्चे जब बड़े हो जाते, छोटे स्कूल को छोड़कर मिडिल स्कूल में जाने लगते तो मौसी का दामन छोड़ देते। तब मुहल्ले के दूसरे नन्हे बच्चे उसका साथ पकड़ लेते थे।

रोज दोपहर ढलने पर मौसी नीम के पेड़ तले पहुँच जाती थी। वहाँ सभी बच्चे खेला करते थे। मौसी को बच्चों के साथ खेलना, उन्हें कहानियाँ, चुटकुले सुनाना बहुत पसंद था। जब शाम

हो जाती और बच्चे खेलकर थक जाते, तो मौसी को घेरकर बैठ जाते; उससे कहानियाँ सुनते। आज मुझे जितनी कहानियाँ याद हैं–तोता–तोती की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, सुन्दरबाई की कहानी– वे मैंने मौसी के मुँह से ही सुनी थीं।

मौसी मैला–सा दुपट्टा ओढ़े रहती थी। उसके हर कोने में कुछ–न–कुछ बँधा रहता था– किसी कोने में थोड़े–से चने, किसी में टिकिया, किसी में दाल–फुलियाँ। मौसी दुपट्टे के छोरों को खोलकर, हम सबकी हथेली पर थोड़ा–थोड़ा चना–चबेना रख देती। एक बार मैंने माँ को बताया तो माँ ने मना कर दिया, "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो? वह थोड़ा–सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी।"

मौसी के साथ दिन–रात रहते हुए भी कोई नहीं जानता था मौसी कौन है ? उसका कोई सगा संबंधी है भी या नहीं? कोई बच्चा उससे पूछता– "मौसी, तुम कहाँ की रहनेवाली हो," तो कहती– "तुम्हारे मुहल्ले की।" "तुम कौन हो ?" तो कहती– "तुम्हारी मौसी।'' "तुम्हारे बेटे–बेटियाँ कहाँ हैं ?" तो अपनी उँगली से एक–एक बच्चे को छूकर कहती– "यह मेरा बेटा, यह मेरी बेटी।" नाम पूछो तो कहती– "मैं मौसी हूँ। यही मेरा नाम है।"

एक दिन जब स्कूल की छुट्टी हुई, हम लोग बस्ते उठाकर बाहर निकले तो मौसी फाटक पर नहीं मिली। उस दिन बच्चों को कोई लेने नहीं गया। दोपहर को बच्चे खेलने के लिए निकले तो मौसी पेड़ के नीचे भी नहीं थी। सभी ने एक–दूसरे से पूछा पर किसी को मालूम नहीं था कि मौसी कहाँ गई है।

कई दिन बीत गए पर मौसी का कुछ पता न चला। कोई कहता, मौसी बीमार है। कोई कहता, वह अपने गाँव चली गई है। मौसी के न रहने से मुहल्ला बड़ा खाली–खाली लगता था। पेड़ के नीचे भी सूना–सूना रहता था। कुछ दिन बाद एक मोची पेड़ के नीचे आकर बैठने लगा। पर बच्चों ने उसे खदेड़कर भगा दिया– "यह मौसी की जगह है। यहाँ कोई नहीं बैठ सकता।" मौसी पेड़ के नीचे बैठती थी, तो घरवालों को भी बच्चों की चिंता नहीं थी। अब वे बच्चों को बाहर नहीं खेलने देते थे।

एक दिन हम मौसी की खोज में घूम रहे थे, तभी हमें एक मकान के अंदर से ऊँची–ऊँची बोलने की आवाज सुनाई दी– "हमने ठेका तो नहीं ले रखा है मौसी; बीस दिन से तुम यहाँ पड़ी हो। अब तुम किसी दूसरे के घर चली जाओ।"

मौसी का नाम सुनकर हम सब ठिठककर खड़े हो गए। बंद दरवाजे की दरार में से अन्दर झाँककर देखा। आँगन में मौसी एक खाट पर लेटी थी। बाल उलझे हुए और चेहरा पीला व सूखा हुआ था। उसके पास ही खड़ी एक औरत उसे डाँटे जा रही थी।

"मैं चली जाऊँगी, जरा शरीर सँभल जाए।"

"तू अपने गाँव चली जा।"

"गाँव में मेरा कौन बैठा है ?" कहती–कहती मौसी रुँआसी हो गई।

हमें बहुत गुस्सा आया। मैंने घर लौटकर माँ से कहा तो वह बोली–"बिज्जू की माँ कहाँ तक उसे अपने पास रख सकती है ? मौसी उनके घर में काम तो करती नहीं।"

"मगर माँ, वह तो सबका काम करती है।"

"हाँ बेटा, मगर वह किसी के घर नौकरी तो नहीं करती।" बात मेरी समझ में नहीं आई। पर मैं चुप हो गया।

दूसरे दिन हमारा हॉकी मैच था। हम खेलकर लौट रहे थे। रास्ते में पुल पड़ता था।

हम बातें करते आ रहे थे। एकाएक हमने मौसी को पुल पर बैठे देखा। पास में एक छोटी–सी गठरी और लाठी रखी थी। मौसी को देखते ही हम सब उसे घेरकर खड़े हो गए।

"तू इतने दिन तक कहाँ थी, मौसी ?" एक ने पूछा।

"यहाँ क्या कर रही है, मौसी ?" दूसरे ने कहा।

"यहाँ क्यों बैठी है, मौसी ?"

"मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा," कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं।

"तू तो बीमार थी, मौसी। तबीयत कैसी है ?" बलदेव ने पूछा।

"बेटा, अब ठीक हो गई हूँ। देखते नहीं, अपने पैरों से चलकर यहाँ तक आ गई हूँ।"

"तू क्यों जा रही है, मौसी ? तू मत जा।"

"मैं बूढ़ी हूँ न, बेटे, अब मैं फिर से जवान होकर आऊँगी," मौसी ने मुसकराते हुए कहा।

"हमारे लिए क्या लाएगी, मौसी ?"

"लाऊँगी, लाऊँगी, चना–चबेना लाऊँगी। गुड़–शक्कर लाऊँगी। लड़कियों के लिए मोती लाऊँगी।" मौसी ने कहा।

थोड़ी देर तक मौसी के पास बतियाकर लड़के आगे बढ़ गए। पर थोड़ी दूर जाने पर मुड़कर देखा तो मौसी पुल पर बैठी रो रही थी। उसकी आँखें ऐसी छलछला आईं थीं कि आँसू थमने में नहीं आते थे।

सहसा सभी लड़के लौट पड़े।

"हम तुम्हें कहीं नहीं जाने देंगे। मौसी, तू हमारे साथ वापस मुहल्ले में चल"—सबने एक स्वर में कहा।

"नहीं बेटा, अब मुझे जाना ही है"— मौसी हकलाते हुए बोली।

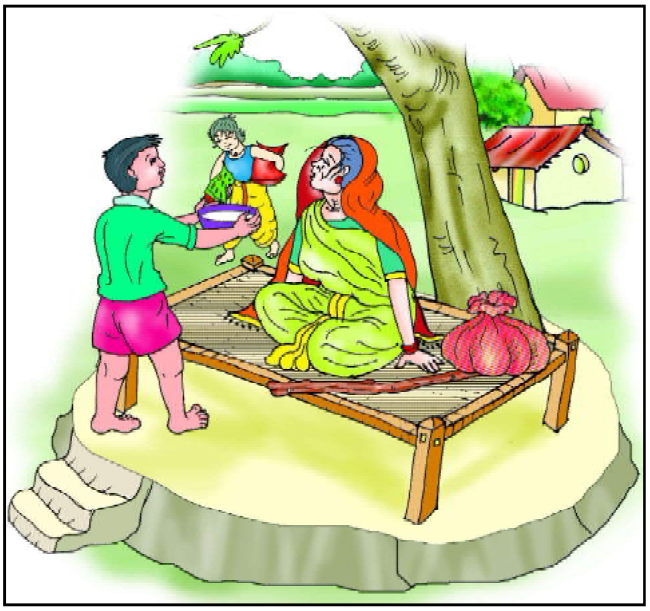

पर लड़के न माने। दो–तीन जने भागकर सड़क पार गए, जहाँ एक दुकान के सामने खाट बिछी थी। वे खाट उठा लाए। उसपर उन्होंने मौसी को जबरदस्ती बैठा दिया। साथ में गठरी और लाठी भी रख दी। फिर खाट उठाकर सभी बच्चे मुहल्ले की ओर चल दिए।

खाट को बच्चे सीधे नीम के पेड़ के नीचे ले आए। कन्हैया भागकर अपने घर से दरी और तकिया उठा लाया; योगराज अपने घर से एक कटोरा दूध। गोपाल अपने घर से लैम्प उठा लाया, जिसे उसके घरवाले रात को सीढ़ियों में रखा करते थे। बलदेव के पिता जी डॉक्टर थे। वह भागता हुआ गया। अपने पिता जी को दुकान से खींच लाया— "मौसी बीमार है? आप चलकर देखिए।" लड़के आपस में बारियाँ बाँधने लगे कि मौसी के पास रात के पहले पहर में कौन रहेगा और दूसरे पहर में कौन? उन्हें डर था कि मौसी को अगर अकेला छोड़ा तो वह भाग जाएगी।

"अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी। मैं तुम्हारे पास ही रहूँगी। तुम जाओ अपने–अपने घर।" जब मौसी ने तसल्ली दी, तब जाकर सबको चैन आया। इस तरह मौसी मुहल्ले में लौट आई। बच्चों ने उसे जाने ही नहीं दिया। फिर तो वह स्वयं भी कहने लगी— "अब मैं सड़क की पटरी पर सो जाया करूँगी, पर अपने बच्चों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी।"

बच्चों के उत्साह को देखकर बच्चों के घरवालों को भी मौसी की चिंता होने लगी। शीघ्र ही मौसी के रहने के लिए जगह मिल गई। हमारे स्कूल में ही हेडमास्टर जी ने उसे काम पर रख लिया। वहीं एक कोठरी में रहने के लिए जगह दे दी।

इस बात को बहुत बरस बीत चुके हैं। मौसी अब भी वहीं है। वह अब सचमुच बुढ़ा गई है, लेकिन तंदुरुस्त है। पोपले मुँह से हँसती है तो बड़ी प्यारी लगती है। अब वह स्कूल की प्याऊ में बैठी, बच्चों को पानी पिलाती है। जब जाड़े के दिन आते हैं तो प्याऊ से हटकर स्कूल के आँगन की धूप में बैठ जाती है। आधी छुट्टी के वक्त बच्चे उसे घेरे रहते हैं। उसके दुपट्टे के छोरों में

पहले की तरह चना–चबेना, मूँगफली, दाल–फुलियाँ बँधे रहते हैं। मौसी बच्चों को कहानियाँ सुनाती–सुंदरबाई की कहानी, काठ के घोड़े की कहानी, तोता–तोती की कहानी। उसे सबकी खबर रहती है। कभी–कभी लाठी टेकती हुई मुहल्ले का चक्कर काटती है। सभी घरों में झाँक–झाँककर घरवालों की कुशल–क्षेम पूछती है। फिर साँझ ढले अपनी कोठरी में लौट आती है।

अभ्यास

पाठ से

1. बच्चों को मौसी ने सितारों जड़ा आसमान कैसे दिखाया ?
2. नन्हे बच्चे मौसी का दामन कब छोड़ते थे ?
3. मौसी के न रहने पर मुहल्ला कैसा लग रहा था और क्यों ?
4. मौसी अचानक गायब क्यों हो गई ?
5. मौसी अपने बारे में सवाल पूछने पर क्या–क्या जवाब देती थी ?
6. मौसी पुल पर बैठकर क्यों रो रही थी ?
7. लड़कों ने मौसी के लिए क्या–क्या किया ?

पाठ से आगे

1. लेखक की माँ अपने बच्चे से कहती है कि "उस गरीबिनी से लेकर क्यों खाते हो ? वह थोड़ा सा चना–चबेना अपने लिए रखती होगी" इन पंक्तियों में लेखक की माँ का कौन सा भाव मौसी के लिए छिपा है आपस में विचार कर लिखिए।
2. मैं बूढ़ी हूँ न बेटे, अब फिर से जवान होकर मैं आऊँगी! मौसी ने ऐसा क्यों कहा होगा ?
3. बिज्जू की माँ ने मौसी के साथ जिस तरह का व्यवहार किया, बुजुर्गों के साथ आपने इस तरह का व्यवहार होते देखा होगा। इस तरह की घटनाओं को देखकर आप क्या महसूस करते हैं, चर्चा कर लिखिए।

4. बच्चों के लगाव से मौसी ने यह क्यों कहा "अब मैं मर भी जाऊँ तो तुम लोगों को छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगी" मौसी का यह वाक्य बच्चों के प्रति उसके किन भावों को प्रकट करते हैं ? अपनी समझ को लिखिए।

भाषा से

1. इन वाक्यों को देखें–

   - मौसी प्रतिदिन बच्चों को कहानियाँ सुनाती थी।
   - उसे भरपेट भोजन मिल पाता था।
   - दोनों शब्द सामासिक पद हैं जो अव्ययीभाव समास के उदाहरण हैं। इस समास में पहला पद प्रधान होता है। इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है अर्थात उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता है। जैसे हाथों–हाथ, बेशक–शक के बिना, निडर –डर के बिना, निस्संदेह–संदेह के बिना।

   पाठ में आए अव्ययीभाव समास के पद ढूँढ़कर लिखें।

2. मैं यहाँ से जा रही हूँ बेटा कहते हुए मौसी की आँखें भर आईं। 'आँखें भर आना' एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है आँखों से आँसू आना 'विछोह की पीड़ा झलकना'। इसी तरह के आँखों से जुड़े हुए बहुत सारे मुहावरे प्रचलित हैं उन्हें खोजकर अर्थ सहित लिखिए।

3. • यहाँ क्यों बैठी हो मौसी ?
   - तबीयत कैसी है ?
   - तू क्यों जा रही है मौसी ?

   उपर्युक्त तीनों वाक्य प्रश्नवाचक हैं (?) पाठ में ऐसे बहुत से अवसर हैं जहाँ प्रश्न वाचक वाक्यों का प्रयोग हुआ है उन्हें खोज कर लिखिए और स्वयं से प्रश्न वाचक शब्दों (क्या, क्यों, कैसे, कब, कहाँ) का प्रयोग करते हुए इस प्रकार के वाक्यों का निर्माण कीजिए।

योग्यता विस्तार

1. इस कहानी का सार कक्षा में सुनाइए।
2. 'मौसी' जैसा या उससे मिलता–जुलता कोई पात्र हर मुहल्ले में अवश्य होता है। उसके बारे में दस वाक्य कक्षा में बताइए।
3. 'भीष्म साहनी' की अन्य कहानियाँ पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।
4. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' की कहानी 'ताई' भी पढ़िए और उसे कक्षा में सुनाइए।

●●●

5ESV15

पाठ 5

सरद रितु आ गे

—पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'

धरती माता ल सुघ्घर बनाए बर रितु समय–समय म बदलत रहिथे, अऊ कभू पानी त कभू ठंड करत रहिथे, जेमा चउमास ह हमर जिनगी के आधार आय। हरियर–हरियर धरती ल देखके सब जीव के मन गदगद हो जाथे अउ सबके जीवन में खुशी भर जाथे। चउमास के पाछु सरद रितु ह अपन संग अनपुरना ल लेके आथे, चउमास के झंझट ह कम होय बर लागथे।

सरद रितु म हमर खेत–खार अउ गाँव ह सुंदर लागथे। चारोकोती तरिया नरवा म कमल फूल ह छतरा गे हवय। चिरई–चुरगुन मन खुशी म चारोखुँट चुहुल–पुहुल करे लागथे। कवि ह ये कविता में सरद रितु के सुघरई के वर्णन करे हवय।

चउमास के पानी परागे।
जाना–माना अब अकास हर,
चाँउर सही छरागे।

जगजग ले अब चंदा उथे,
बादर भइगे फरियर।
पिरथी, माता चारोंखुँट ले,
दिखथे हरियर–हरियर।
रिगबिग ले अब अनपुरना हर
खेतन–खेत म छागे।।

नँदिया अउ तरिया के पानी,
कमती होये लागिस।
रद्दा के चउमास के चिखला
झंझटहा हर भागिस।
बने पेट भर पानी पी के
पिरथी आज अघा गे।।

लछमी ला लहुटारे खातिर,
जल देवता अगुवाइस।
तब जगजग ले पुरइन पाना–
के दसना दसवाइस।
रिगबिग ले फेर कमल फूल
हर,तरिया भर छतरागे।।

चारोंखुँट म चुहुल–पुहुल,
अब करथें चिरइ–चुरगुन।
भौंरा घलो परे हे बइहा,
करथे गुनगुन–गुनगुन।
अमरित बरसा होही संगी,
सुघर घड़ी अब आगे।।

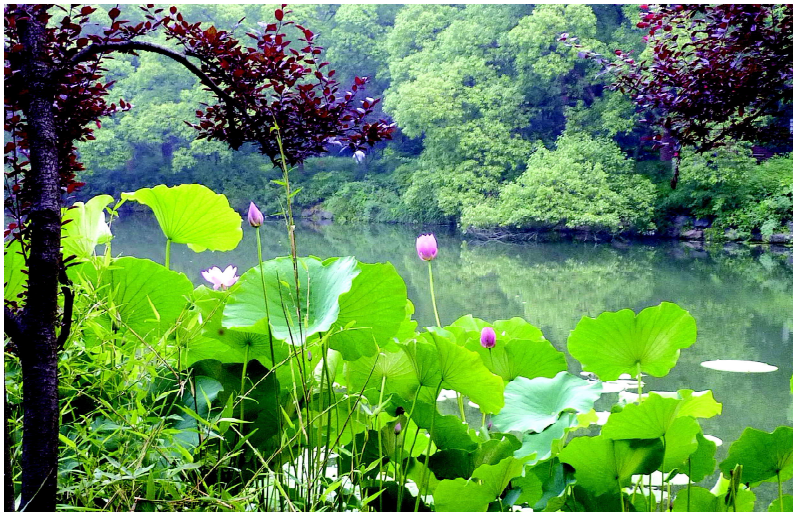

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

चउमास	=	वर्षा ऋतु के चार माह,बरसात	झंझटहा	=	परेशान करने वाला
			अघागे	=	तृप्त हो गया
परागे	=	दूर हो गया	लहुटारे खातिर	=	वापस लाने के लिए
चाँउर	=	चावल	पुरइन	=	कमल
सही	=	जैसे	दसना	=	बिस्तर
छराना	=	चावल को मूसल से कूटकर साफ करना	छतरागे	=	फैल गया
			चुहुल–पुहुल	=	इधर –उधर उड़कर कलरव करना,चहल–पहल
जगजग ले उथे	=	प्रकाशवान उगता है			
भइगे	=	हो गया	चिरइ–चुरगुन	=	पक्षी
चारोंखुँट	=	चारों ओर	बइहा	=	पागल
रिगबिग ले	=	झिलमिलाता हुआ	सुघर	=	सुंदर
अनपुरना	=	अन्नपूर्णा,धरती	घड़ी	=	समय

अभ्यास

पाठ से

1. 'अकास हर चाँउर सही छरागे' के का भाव हे ?
2. नँदिया अउ तरिया के पानी काबर कमती होय लागिस ?
3. लछमी ल लहुटारे खातिर जल देवता ह का–का उदिम करिस ?
4. कवि ह अमृत बरसा काला कहे हवय, अउ ये बरसा कब होथे ?
5. सरद रितु मा हमर चारों खुँट का–का बदलाव होथे ?
6. चउमास हमर जिनगी के सुख समृद्धि के आधार काबर माने गेहे अउ चउमास म का–का होथे?
7. कवि सुघ्घर घड़ी कोन समय ल कहे हवय अउ वो समय का–का बदलाव होगे?

पाठ से आगे

5F2R2S

1. सरद रितु के आय ले चिरइ–चिरगुन अउ भौंरा मन अपन खुशी ल कइसे परगट करत हवय? अपन भाषा में लिखव।
2. 'बने पेट भर पानी पी के पिरथी आज अघा गे' ये वाक्य ल कवि काबर केहे हवय?
3. तुँहर सोच से कोन से रितु ह सबले सुघ्घर होथे, सुघ्घर काबर लगथे ? अपन कक्षा में विचार करके लिखव।
4. चउमास के महिना में तुँहर घर के आस–पास मा का–का बदलाव होथे। अउ तुमन ल ओकर से का–का परशानी अउ का आसानी लगथे। अपन कक्षा में विचार करके लिखव।

भाषा से

5FBM4F

1. ये शब्द मन के हिंदी खड़ी बोली के शब्द रूप लिखव–
   चाँउर, जगजग, पिरथी, चारों खुँट, रिगबिग, अनपुरना, तरिया, पुरइन, दसना, बइहा, चुहुल–पुहुल।
2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव–
   अकास, बरसा, फरियर, सुघर, बइहा, झंझटहा, कमती
3. ये शब्द मन ल अर्थ स्पष्ट करे बर अपन वाक्य में प्रयोग करव–
   गुनगुन–गुनगुन, हरियर–हरियर, घड़ी, अमरित, चिरइ–चुरगुन, तरिया, रिगबिग, चाँउर, अघागे।

योग्यता विस्तार

5FKI63

1. ये कविता के अधार ले सरद रितु के सुंदरता के एक ठन 10 वाक्य के निबन्ध लिखव।
2. सरद ऋतु के संबंध में हिंदी अउ छत्तीसगढ़ी भाषा में पाँच ठन कविता खोजव अउ अपन स्कूल के बालसभा म सुनावव।

पाठ 6

सदाचार का तावीज़

– श्री हरिशंकर परसाई

5FUE7Q

भ्रष्टाचार आज के समय और समाज का बहुचर्चित विषय है और यह भ्रष्टाचार परसाई जी के रचनाकाल में भी अपने फलते–फूलते रूप में रहा होगा। तभी तो अपने तीखे व्यंग्य में भ्रष्टाचार के विभिन्न रूप–तरीकों को व्यंग्यकार ने कथात्मक कलेवर में कुछ हकीकत और कुछ कल्पना के जरिये व्यवस्थागत खोखलेपन और दरबारी संस्कृति के साथ सघन रूप में उभारा है।

एक राज्य में हल्ला मचा कि भ्रष्टाचार बहुत फैल गया है।

राजा ने एक दिन दरबारियों से कहा, ''प्रजा बहुत हल्ला मचा रही है कि सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। हमें तो आज तक कहीं नहीं दिखा। तुम लोगों को कहीं दिखा हो तो बताओ।''

दरबारियों ने कहा, ''जब हुजूर को नहीं दिखा तो हमें कैसे दिख सकता है ?''

राजा ने कहा, ''नहीं, ऐसा नहीं है। कभी–कभी जो मुझे नहीं दिखता, वह तुम्हें दिखता होगा। जैसे मुझे बुरे सपने कभी नहीं दिखते, पर तुम्हें तो दिखते होंगे!''

दरबारियों ने कहा, ''जी, दिखते हैं। पर वे सपनों की बात हैं?''

राजा ने कहा, ''फिर भी तुम लोग सारे राज्य में ढूँढ़कर देखो कि कहीं भ्रष्टाचार तो नहीं है। अगर कहीं मिल जाए तो हमारे देखने के लिए नमूना लेते आना। हम भी देखें कि कैसा होता है। ''

एक दरबारी ने कहा, ''हुजूर! वह हमें नहीं दिखेगा। सुना है, वह बहुत बारीक होता है। हमारी आँखें आपकी विराटता देखने की इतनी आदी हो गई हैं कि हमें बारीक चीज नहीं दिखती। हमें भ्रष्टाचार दिखा भी तो उसमें हमें आपकी ही छवि दिखेगी क्योंकि हमारी आँखों में तो आपकी ही सूरत बसी है। पर अपने राज्य में एक जाति रहती है, जिसे 'विशेषज्ञ' कहते हैं। इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं। मेरा निवेदन है कि इन विशेषज्ञों को ही हुजूर भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का काम सौंपें। ''

राजा ने 'विशेष' जाति के पाँच आदमी बुलाए और उनसे कहा, ''सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है। पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए तो पकड़कर हमारे पास ले आना। अगर बहुत हो तो नमूने के लिए थोड़ा–सा ले आना।''

विशेषज्ञों ने उसी दिन से छानबीन शुरू कर दी।

दो महीने के बाद वे फिर से दरबार में हाजिर हुए।

राजा ने पूछा, ''विशेषज्ञों! तुम्हारी जाँच पूरी हो गई?''

''जी सरकार।''

''क्या भ्रष्टाचार मिला?''

''जी, बहुत–सा मिला।''

राजा ने हाथ बढ़ाया, ''लाओ, मुझे बताओ, देखूँ, कैसा होता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हुजूर! वह हाथ की पकड़ में नहीं आता। वह स्थूल नहीं, सूक्ष्म है। पर वह सर्वत्र व्याप्त है। उसे देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है।''

राजा सोच में पड़ गए। बोले, ''विशेषज्ञो, तुम कहते हो वह सूक्ष्म है और सर्वव्यापी है। ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! अब भ्रष्टाचार ईश्वर हो गया है।''

एक दरबारी ने पूछा, ''पर वह है कहाँ ? कैसे अनुभव होता है?''

विशेषज्ञों ने जवाब दिया,''वह सर्वत्र है। वह इस भवन में है। वह महाराज के सिंहासन में है।''

''सिंहासन में है?'' कहकर राजा साहब उछलकर दूर खड़े हो गए।

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ सरकार! सिंहासन में है। पिछले माह इस सिंहासन पर रंग करने के जिस बिल का भुगतान किया गया है, वह बिल झूठा है। वह वास्तव से दुगुने दाम का है, आधा पैसा बीचवाले खा गए। आपके पूरे शासन में भ्रष्टाचार है और वह मुख्यतः घूस के रूप में है।''

विशेषज्ञों की बात सुनकर राजा चिंतित हुए और दरबारियों के कान खड़े हुए।

राजा ने कहा, ''यह तो बड़ी चिन्ता की बात है। हम भ्रष्टाचार बिलकुल मिटाना चाहते हैं। विशेषज्ञों! तुम बता सकते हो कि वह कैसे मिट सकता है?''

विशेषज्ञों ने कहा, ''हाँ महाराज! हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। और ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाय तो उसकी घूस जाए। इसी तरह और बहुत–सी चीजें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह भी विचारणीय है?''

राजा ने कहा, ''अच्छा, तुम अपनी पूरी योजना रख जाओ। हम और हमारा दरबार उस पर विचार करेगा।'' विशेषज्ञ चले गए।

राजा और दरबारियों ने भ्रष्टाचार मिटाने की योजना को पढ़ा। उस पर विचार किया। विचार करते–करते दिन बीतने लगे और राजा का स्वास्थ्य बिगड़ने लगा। एक दिन एक दरबारी ने कहा, ''महाराज! चिंता के कारण आपका स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा है। उन विशेषज्ञों ने आपको झंझट में डाल दिया।''

राजा ने कहा, ''हाँ, मुझे रात को नींद नहीं आती।''

दूसरा दरबारी बोला, ''ऐसी रिपोर्ट को आग के हवाले कर देना चाहिए, जिससे महाराज की नींद में खलल पड़े।''

राजा ने कहा, ''पर करें क्या ? तुम लोगों ने भी भ्रष्टाचार मिटाने की योजना का अध्ययन किया है। तुम्हारा क्या मत है? क्या उसे काम में लाना चाहिए?

दरबारियों ने कहा, ''महाराज! यह योजना क्या है, एक मुसीबत है। उसके अनुसार कितने उलट–फेर करने पड़ेंगे ! कितनी परेशानी होगी! सारी व्यवस्था उलट–पुलट हो जाएगी। जो चला आ रहा है, उसे बदलने से नई–नई कठिनाइयाँ पैदा हो सकती हैं। हमें तो कोई ऐसी तरकीब चाहिए, जिससे बिना कुछ उलट–फेर किए भ्रष्टाचार मिट जाए।''

राजा साहब बोले, ''मैं भी यही चाहता हूँ। पर यह हो कैसे? तुम लोग ही कोई उपाय खोजो।''

एक दिन दरबारियों ने राजा के सामने एक साधु को पेश किया और कहा, ''महाराज, एक कन्दरा में तपस्या करते हुए इन महान साधक को हम ले आए हैं। इन्होंने सदाचार का तावीज़ बनाया है। वह मन्त्रों से सिद्ध है और उसके बाँधने से आदमी एकदम सदाचारी हो जाता है।''

साधु ने अपने झोले में से एक तावीज़ निकालकर राजा को दिया। राजा ने उसे देखा। बोले, ''हे साधु! इस तावीज़ के विषय में मुझे विस्तार से बताओ। इससे आदमी सदाचारी कैसे हो जाता है?''

साधु ने समझाया,''महाराज! भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है, बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की कल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, जिन्हें 'आत्मा की पुकार' कहते हैं। आत्मा की पुकार के अनुसार ही आदमी काम करता है। प्रश्न यह है कि जिनकी आत्मा से बेईमानी के स्वर निकलते हैं, उन्हें दबाकर ईमानदारी के स्वर कैसे निकाले जाएँ? मैं कई वर्षों से इसी के चिन्तन में लगा हूँ। अभी मैंने यह सदाचार का तावीज़ बनाया है। जिस

आदमी की भुजा पर यह बँधा होगा, वह सदाचारी हो जाएगा। मैंने कुत्ते पर भी प्रयोग किया है। यह तावीज़ गले में बाँध देने से कुत्ता भी रोटी नहीं चुराता। बात यह है कि तावीज़ में से भी सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है, तब यह तावीज की शक्ति उस आत्मा का गला घोंट देती है और आदमी को तावीज़ के ईमान के स्वर सुनाई पड़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है। यही तावीज़ का गुण है, महाराज !''

दरबार में हलचल मच गई। दरबारी उठ–उठकर तावीज को देखने लगे।

राजा ने खुश होकर कहा, ''मुझे नहीं मालूम था कि मेरे राज्य में ऐसे चमत्कारी साधु भी हैं। महात्मन्! हम आपके बहुत आभारी हैं। आपने हमारा संकट हर लिया। हम सर्वव्यापी भ्रष्टाचार से बहुत परेशान थे। मगर हमें लाखों नहीं, करोड़ों तावीज़ चाहिए। हम राज्य की ओर से ताबिज़ों का एक कारखाना खोल देते हैं। आप उसके जनरल मैनेजर बन जाएँ और अपनी देख–रेख में बढ़िया तावीज़ बनवाएँ।''

एक मंत्री ने कहा, ''महाराज! राज्य क्यों झंझट में पड़े। मेरा तो निवेदन है कि साधु बाबा को ठेका दे दिया जाए। वे अपनी मंडली से तावीज़ बनवाकर राज्य को सप्लाई कर देंगे।''

राजा को यह सुझाव पसन्द आया। साधु को तावीज़ बनाने का ठेका दे दिया गया।उसी समय उन्हें पाँच करोड़ रुपये कारखाने के लिए पेशगी मिल गए।

राज्य के अखबारों में खबरें छपीं, ''सदाचार के तावीज़ की खोज! तावीज़ बनाने का कारखाना खुला!''

लाखों तावीज़ बन गए। सरकार के हुक्म से हर सरकारी कर्मचारी की भुजा पर एक–एक तावीज़ बाँध दिया गया।

भ्रष्टाचार की समस्या का ऐसा सरल हल निकल आने से राजा और दरबारी सब खुश थे। एक दिन राजा की उत्सुकता जागी। सोचा, ''देखें तो कि यह तावीज़ कैसे काम करता है।'' वह वेश बदलकर एक कार्यालय गए। उस दिन दो तारीख थी। एक दिन पहले ही तनख्वाह मिली थी।

वह एक कर्मचारी के पास गए और कोई काम बताकर उसे पाँच रुपये का नोट देने लगे। कर्मचारी ने उन्हें डाँटा,'' भाग जाओ यहाँ से, घूस लेना पाप है।''

राजा बहुत खुश हुए। तावीज ने कर्मचारी को ईमानदार बना दिया था। कुछ दिन बाद वे फिर वेश बदलकर उसी कर्मचारी के पास गए। उस दिन इकतीस तारीख थी– महीने का आखिरी दिन।

राजा ने फिर उसे पाँच का नोट दिखाया और उसने लेकर जेब में रख लिया। राजा ने उसका हाथ पकड़ लिया। बोले,'' मैं तुम्हारा राजा हूँ। क्या तुम आज सदाचार का तावीज नहीं बाँधकर आए?''

''बाँधा है, सरकार! यह देखिए।''

उसने आस्तीन चढ़ाकर तावीज़ दिखा दिया।

राजा असमंजस में पड़ गए। फिर ऐसा कैसे हो गया ?

उन्होंने तावीज़ पर कान लगाकर सुना। तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे, ''अरे, आज इकतीस है। आज तो ले लो।''

अभ्यास

पाठ से

1. दरबारियों को भ्रष्टाचार क्यों दिखाई नहीं पड़ रहा था ?
2. विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार के बारे में राजा को क्या बताया ?
3. भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए विशेषज्ञों ने राजा को क्या सुझाव दिए।
4. भ्रष्टाचार मिटाने की योजना पढ़ने के बाद राजा की तबीयत क्यों खराब रहने लगी ?
5. साधु ने राजा को भ्रष्टाचार के बारे में क्या बताया ?
6. राजा ने ताबीज के प्रभाव को परखने के लिए क्या किया ?
7. राजा ने भ्रष्टाचार की तुलना ईश्वर से क्यों की ?

पाठ से आगे

1. पाठ में उल्लेख किया गया है कि "भ्रष्टाचार सर्वत्र है, सर्वव्यापी है।" आप इस बात से सहमत हैं या असहमत तर्क के साथ अपनी समझ को लिखिए।
2. क्या आपको लगता है कि ताबीज जैसे साधनों से भ्रष्टाचार खत्म किया जा सकता है? अगर हाँ तो कैसे और नहीं तो क्यों ?

5S8MNA

3. हमारे देश अथवा राज्य में भ्रष्टाचार फैलने के क्या कारण आपको प्रतीत होते हैं ? साथियों से बातचीत कर अपनी समझ को लिखिए।
4. 'भ्रष्टाचार का नमूना' से आप क्या समझते हैं ? आपने अपने आस–पास किन रूपों में भ्रष्टाचार के नमूने या स्वरूप को देखा है। उक्त घटना या विषय पर अपने विचार लिखिए।

भाषा से

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए पाठ के उन अंशों को खोजिए जहाँ इनका प्रयोग हुआ है और फिर संदर्भ को समझते हुए अर्थ लिखिए –
   - छानबीन करना, हवाले करना, खलल पड़ना, उलट–फेर, असमंजस में पड़ना।
2. निम्नांकित वाक्यों को ध्यान से पढ़िए–
   - मैं कल दरबार में जाऊँगा।
   - कल साधु राजा से मिला।
   - विधाता किसी की आत्मा की ईमान में कल फिट कर देता है।

5SHIPX

उपर्युक्त वाक्य में रेखांकित शब्द 'कल' के तीन भिन्न अर्थ हैं। उसी प्रकार इन समान उच्चारण वाले शब्दों के अर्थों को वाक्य में प्रयोग करते हुए स्पष्ट कीजिए।

पद, आम, अंक, सोना, कनक, खर

योग्यता विस्तार

1. भ्रष्टाचार को समाप्त करने के आप सभी के पास कौन–कौन से नायाब तरीके हैं। आपस में बात कर अपने सुझाव को विस्तार से लिखिए।
2. व्यंग्य रचना क्या होती है ? यह साहित्य की अन्य विधाओं से कैसे भिन्न और मजेदार होती है? इस विषय पर शिक्षक से बातचीत कर किसी अन्य व्यंग्य विधा की रचना को खोज कर पढ़िए।

5SRERK

●●●

पाठ 7

रात का मेहमान

—संकलित

आजाद भारत के सपने को सच करने के लिए भारत के अनेकों युवाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगायी। अपना सर्वस्व राष्ट्र की बलिवेदी पर होम कर दिया। ऐसे ही अमर क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद रहे, जिनकी हर साँस में देश और देशवासियों के प्रति प्रेम और उत्सर्ग की भावना कूट–कूट कर भरी थी। प्रस्तुत कहानी में आजाद के व्यक्तित्व के दो पहलू दिखते हैं, जहाँ एक ओर वे ब्रिटिश सरकार को चकमा देते हुए उससे लोहा लेते हैं तथा उसी शासन में उनके नाक के नीचे क्रांतिकारी गतिविधियों को अंजाम देते हैं वहीं दूसरी ओर 'कल्पना' जैसी प्रतिभाशाली छात्रा के संघर्ष और विपन्नता को समझते हुए नोटों से भरा ब्रीफकेस उसे थमा कर अँधेरे में गुम हो जाते हैं।

सन् 1920 ई. के शान्ति आन्दोलन के बाद भारतीय क्रांतिकारियों ने 9 अगस्त, 1925 की रात को पहला धमाका किया, लखनऊ के निकट काकोरी में। उन्होंने तत्कालीन 8 डाउन ट्रेन से जाता हुआ सरकारी खज़ाना लूट लिया। इस घटना से ब्रिटिश सरकार काँप उठी। क्रान्तिकारियों को पकड़ने के लिए गुप्तचरों को आदेश दिए गए। गिरफ्तारियाँ हुईं। तिल का ताड़ बनाया गया। बहुतों को फाँसी के फंदे नसीब हुए तो कइयों को आजन्म काला पानी। वर्षों का ठोस क्रान्तिकारी संगठन मिनटों में छिन्न–भिन्न हो गया। एक के बाद दूसरा क्रांतिकारी, ब्रिटिश गुप्तचर विभाग की नजरों का शिकार होता ही गया। किन्तु उनके सेनापति चंद्रशेखर आज़ाद, फरारी की हालत में भी ब्रिटिश सत्ता से डटकर लोहा ले रहे थे।

उन्हीं दिनों की बात है। फरवरी सन् 1930 का प्रथम सप्ताह। जाड़ा अपने अंतिम जोश में था। बारिश तेज़ थी। रात दस बजे लखनऊ चारबाग स्टेशन पर यात्रियों से अधिक तो पुलिसवाले ही थे, लेकिन चार–छह वर्दीधारी ही दिखाई दे रहे थे। बाकी सब सादे लिबास में थे। ठीक सवा दस बजे देहरादून एक्सप्रेस प्लेटफार्म नंबर एक पर आकर रुकी। मुखबिर ने सूचना दी थी कि 'आज़ाद' इसी गाड़ी से बनारस जाएँगे। उन्हें बीच में ही धर दबोचने के इरादे से पुलिसवालों ने गाड़ी का एक–एक डिब्बा छान मारा, लेकिन चंद्रशेखर 'आज़ाद' का पता न चला।

गाड़ी छूटने से थोड़ी देर पहले एक गुप्तचर दौड़ता हुआ पुलिस अफसर के पास आया और हाँफते हुए बोला कि 'आज़ाद' तो एक साहब बहादुर के वेश में बाहर निकल गए। इंसपेक्टर के चौंकने पर उसने गेट से लाया प्रथम श्रेणी का एक टिकट भी उनके आगे बढ़ा दिया जो देहरादून से बनारस तक का था – पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आज़ाद' बीच में उतर पड़े थे। टिकट के पीछे लिखा था – "मुझे जीवित पकड़ना असंभव है।" – आज़ाद।

अब तो अफसर को काटो तो खून नहीं। फौरन सबको इकट्ठा करके 'आज़ाद' का पीछा करने की ठानी।

हाथ में अटैची लिए 'आज़ाद' खरामा–खरामा चलकर लाटूश रोड पर आए। तभी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा, पुलिस के बहुत से जवान दौड़ते हुए, उसी ओर आ रहे थे। बाँसमंडी चौराहे से वे तुरंत लाल कुएँ की ओर मुड़े। चलने की रफ़्तार और तेज़ कर दी। फिर ह्वीवेट रोड पर आते–आते एक सँकरी गली में मुड़े। तीन–चार मकान छोड़कर सहसा उनके हाथ की थपकियाँ दाहिनी ओर के दरवाजे पर पड़ने लगीं।

क्षणभर में एक बुढ़िया ने कुंडी खोलते हुए पूछा, "कौन ?"

"बहुत भीग गया हूँ। बारिश थमने तक शरण चाहता हूँ।"

टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी 'आज़ाद' के चेहरे पर पड़ी। "अंदर आ जाओ, बेटा", कहकर बुढ़िया ने दरवाजा खोल दिया। मकान में दाखिल होते ही 'आज़ाद' ने झट कुंडी बंद कर दी। फिर आँगन पार करके दोनों अंदर आए। तख्त पर बैठने का इशारा करके बुढ़िया ने दीया वहीं दीवट पर रख दिया और कमरे से धोती निकाली। धोती जनानी थी। देखते ही उन्हें हँसी आ गई।

"बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" बुढ़िया ने कहा।

'आज़ाद' चुप रहे। केवल तौलिया ही इस्तेमाल में लाए।

"क्या नाम है तुम्हारा?" बुढ़िया ने बड़े स्नेह से पूछा।

"जीवन में कभी झूठ तो बोला नहीं, और सच बोलने की इस समय इच्छा नहीं है", आज़ाद बोले।

"क्यों ? सच बोलने में क्या डर है ? जो भी हो, सच कहो।"

"चंद्रशेखर आज़ाद।'' 'आज़ाद' ने कहा।

''जो फरार है,। वही 'आज़ाद', जिसकी जिंदा या मुर्दा गिरफ्तारी के लिए सरकार ने पंद्रह हजार रुपयों का इनाम घोषित किया है" बुढ़िया चौंकी।

"जी, वही।"

"तुम्हारा अपराध ?"

"देशभक्ति। मैं किसी भारतीय को रोटी, कपड़ा और मकान के लिए दर–दर भटकते नहीं देख सकता। अँग्रेजी शासन अब सहन नहीं होता। भारत माँ के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ने का संकल्प लिया है मैंने। बस, यही अपराध है मेरा।" 'आज़ाद' आवेश में कहते गए।

"धन्य है तुम्हारा संकल्प ! धन्य है वह माँ, जिसकी कोख ने ऐसा लाल जन्मा। तुम्हारे दर्शन पाकर मैं धन्य हुई।"

'आज़ाद' ने बुढ़िया को उस टिमटिमाते हुए दीये की रोशनी में गौर से देखा। उसकी आयु पचास से ऊपर होगी। उसके तेजस्वी मुख और निश्छल नेत्रों से लगा कि वह किसी कुलीन परिवार की पढ़ी–लिखी निर्धन महिला है।

तभी अचानक बुढ़िया को खाँसी का दौरा उठा। ऊपर कमरे में से निकलकर कोई तेजी से जीने की ओर लपका। 'आज़ाद' वहीं कोने में छिप गए। वह बुढ़िया की इकलौती बेटी कल्पना थी। ऊपर कमरे में बैठी पढ़ रही थी। माँ को उठा दौरा सुनकर तुरंत भागी–भागी नीचे आई और उनकी पीठ सहलाने लगी। फिर कटोरी में दो घूँट पानी पीने को दिया। स्वस्थ होकर बुढ़िया भौंचक्की–सी इधर–उधर देखने लगी। लड़की सहम गई। पूछा–"क्या है माँ ? किसे देख रही हो?"

"वह कहाँ गया, जो अभी मुझसे बातें कर रहा था ?"

कल्पना ने 'आज़ाद' की ओर देखा और माँ से पूछा, "ये कौन हैं, माँ ?"

"रात का मेहमान। बड़ा योग्य और समझदार व्यक्ति है।"

"योग्य और समझदार हूँ, तभी तो सारे दिन से भूखा हूँ" 'आज़ाद' ने सहज भाव से कहा।

"अरे बेटी, मैं तो भूल ही गई। इन्हें कुछ खिलाओ–पिलाओ," बुढ़िया ने कहा।

एक साफ–सुथरी काँसे की थाली में पराँठे और दही–बूरा लेकर कल्पना आई और उसे वहीं तिपाई पर रख दिया। हाथ धोकर 'आज़ाद' खाने बैठे, तो एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खाने लगे। कल्पना को हँसी आ गई।

"भूख में ऐसा ही होता है। तुम कभी भूखी रही हो ?" 'आज़ाद' ने पूछा।

"हमारे लिए भूखे रहना कोई नई बात नहीं है। वैसे आधे पेट तो अक्सर ही रहते हैं।"

"फिर भी रात बारह–बारह बजे तक पढ़ना।"

"परीक्षा निकट है।"

"किस कक्षा में पढ़ती हो ?"

"एम. ए. द्वितीय वर्ष में।"

"विषय क्या है तुम्हारा ?"

"संस्कृत।"

"शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो।"

खाना खाने के बाद 'आज़ाद' ने दो लोटे ठंडा जल पिया। कल्पना ऊपर पढ़ने चली गई। बुढ़िया ने बताया कि कल्पना बीस रुपए मासिक की ट्यूशन करती है। उसी में किसी तरह गुजर–बसर हो जाती है। उसकी शादी भी करनी है। लड़का तो है नज़र में, लेकिन पैसे की समस्या मुँह बाये खड़ी है।

वातावरण में कुछ उदासी–सी छा गई। तभी जी.पी.ओ. की घड़ी ने टन्–टन् करके रात के दो बजाए। 'आज़ाद' ने जाना चाहा। बुढ़िया ने कभी–कभी मिलते रहने के लिए कहा।

आज़ाद ने फिर आने का वचन दिया और कल्पना को बुलाने के लिए कहा। वह अभी तक पढ़ रही थी। माँ की आवाज़ सुनकर वह तुरंत नीचे आई और बोली, "बाणभट्ट की कादंबरी पढ़ रही थी। बड़ी कठिन रचना है।"

"संसार में कोई काम कठिन नहीं। मन लगाकर पढ़ो और प्रथम श्रेणी लाओ। यही मेरा आशीर्वाद है।" 'आज़ाद' ने कहा।

"आप सबके आशीर्वाद से प्रथम तो सदा आई हूँ। इस बार भी आ सकती हूँ।"

"अच्छा, तो ये लो अपने प्रथम आने का इनाम"– कहकर 'आजाद' ने ब्रीफकेस कल्पना के हाथ में थमा दिया और वे बुढ़िया को प्रणामकर तुरंत वहाँ से चल दिए।

कल्पना ने ब्रीफकेस खोला। उसमें भरे थे सैकड़ों रुपये के नोट, शायद कल्पना के विवाह के लिए।

रुपये लेकर वृद्धा दरवाजे की ओर झपटी। 'आज़ाद' जा चुके थे। बारिश ने और भी भयंकर रूप धारण कर लिया था।

अँधेरे में ताकती वृद्धा न जाने क्या सोच रही थी ?

टिप्पणी– क्रांतिवीर चन्द्रशेखर 'आज़ाद' का जन्म मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाभरा नामक गाँव में हुआ था। उनके पिताजी एक बहुत साधारण–सा काम करते थे। चन्द्रशेखर की प्रारम्भिक शिक्षा भाभरा में ही हुई। आगे की शिक्षा के लिए वे वाराणसी (बनारस) गए। वहाँ वे स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने लगे। एक बार किसी सत्याग्रह में वे पकड़ लिए गए। मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा, '' तुम्हारा क्या नाम है ? ''

चन्द्रशेखर बोले, ''आज़ाद।''

''तुम्हारे पिताजी का क्या नाम है? ''

''स्वतंत्र।''

''तुम्हारा निवास कहाँ है?''

''जेलखाना।'

न्यायाधीश इन प्रश्नों के उत्तर सुनकर बिगड़ गया। उसने उन्हें पन्द्रह बेंत मारने की सजा दी।

उन्हें पंद्रह बेंत लगाए गए। हर बेंत पर उन्होंने आवाज बुलंद की 'भारत माता की जय'। वे तभी से क्रांतिकारियों के संगठन में शामिल हो गए। अंत में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से उनकी मुठभेड़ हुई। उनकी पिस्तौल में एक गोली बची थी। वह उन्होंने अपनी कनपटी में मारकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। अल्फ्रेड पार्क में उनकी समाधि बनी है। वह पार्क अब 'आज़ाद पार्क' हो गया है।

अभ्यास

पाठ से

1. चन्द्रशेखर आजाद के बारे में आप क्या जानते हैं ?
2. क्रांतिकारियों ने 09 अगस्त 1925 की रात क्या किया ?
3. पुलिस को चकमा देने के लिए आजाद ने क्या किया ?
4. बुजुर्ग स्त्री के पूछे जाने पर आजाद ने अपना क्या अपराध बताया और आपकी नजर में क्या वह अपराध था ?
5. मजिस्ट्रेट द्वारा पूछने पर चन्द्रशेखर आजाद ने अपना क्या परिचय दिया ?
6. आजाद का अपराध जानने के बाद वृद्ध स्त्री के मन में आजाद के प्रति क्या भाव उत्पन्न हुए ?

पाठ से आगे

1. अगर वह वृद्ध स्त्री चंद्रशेखर आजाद के बारे में पुलिस को सूचना दे देती तो क्या होता? लिखिए।
2. यदि चंद्रशेखर आजाद की जगह आप होते तो रुपयों से भरे ब्रीफकेस का क्या करते ?
3. 'शाबाश ! संस्कृत पढ़ती हो तभी तो आधे पेट रहती हो' आजाद द्वारा ऐसा कहे जाने के पीछे क्या कारण आपको लगते हैं ?
4. आजाद एक–एक पराठे के दो–दो कौर बनाकर खा रहे थे। आपको जब जोरों की भूख लगती है, तो आप क्या–क्या करते हैं ?

भाषा से

1. • "बिटिया की है। घर में कोई मर्द तो है नहीं" वृद्ध स्त्री ने कहा।
   • पुलिस को चकमा देने के इरादे से 'आजाद' बीच में ही उतर पड़े थे।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में इकहरे और दुहरे उद्धरण चिह्न (' ' एवं " ") का प्रयोग हुआ है। बुजुर्ग स्त्री द्वारा कही गई बात को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करते हुए दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग हुआ है वहीं आजाद उपनाम के लिए इकहरा उद्धरण चिह्न प्रयुक्त हुआ है।

अर्थात् किसी के द्वारा कहे गए कथन या किसी महापुरुष की बात (आप्त वाक्य) को यथावत प्रस्तुत करने पर दुहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है वहीं किसी संज्ञा, नाम अथवा उपनाम के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग होता है। पाठ में उपर्युक्त दोनों प्रकार के प्रयुक्त उद्धरण चिह्नों को पहचान कर रेखांकित कीजिए।

2. पाठ में प्रयुक्त हुए उर्दू भाषा के निम्नलिखित शब्दों के लिए हिंदी के समान अर्थ वाले शब्दों को ढूँढ़कर या पूछ कर लिखिए–

सजा, आवाज, शामिल, दरवाजे, नजर, फरार, लिबास, खून, जोश, रफ्तार।

3. अनौपचारिक पत्राचार उनके साथ किया जाता है, जिनसे हमारा व्यक्तिगत, पारिवारिक अथवा भावनात्मक संबंध होता है। इसे व्यक्तिगत पत्राचार भी कहा जाता है। इसलिए इन पत्रों में व्यक्तिगत सुख, दुःख, आशा अपेक्षा, निराशा का भावात्मक अंकन होता है। ये पत्र अपने परिवार के लोगों, मित्रों, और निकट संबंधियों को लिखे जाते हैं। इनके तीन प्रमुख भाग होते हैं –

शीर्ष भाग – इसमें अपना पता, दिनाँक, संबोधन वाक्य आते हैं

मध्य भाग – इस भाग में संदेश अथवा कथ्य रहता है

अन्त्य भाग – इसमें स्वनिर्देश के अंतर्गत अपना नाम, हस्ताक्षर और पता रहता है तथा आवश्यकतानुसार पत्र पाने वाले का नाम पता बाईं ओर लिखते हैं।

आप अपने छोटे भाई अथवा बहन को एक पत्र में लिखिए जिसमें क्रांतिकारियों की भूमिका का संक्षेप में वर्णन हो।

योग्यता विस्तार

1. स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदान देने वाले शहीदों के जीवन प्रसंगों पर कक्षा–कक्ष में चर्चा कीजिए।
2. आजकल जहाँ देश में एक ओर नक्सलवाद है वहीं दूसरी ओर आतंकवाद व अलगाववाद की घटनाएँ भी देखने–सुनने को मिलती हैं पर इनमें और राष्ट्र के लिए आहुति देनेवाले क्रांतिकारी के संगठन में क्या फर्क है। चर्चा कर प्रमुख विचारों को लिखिए।

5TSXY6

3. आजाद ने नोटों से भरा जो ब्रीफकेस कल्पना को दिया, वह संगठन के कार्यों के उपयोग के लिए एकत्रित किया गया धन था। उस धन को आजाद ने व्यक्ति विशेष के हित के लिए दिया था। उनका यह कार्य क्या उचित था? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

पाठ 8

भिखारिन

– गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर

5U2TZT

प्रस्तुत कहानी एक पुत्रवत्सला दिव्यांग भिखारिन के विश्वास के छले जाने और संघर्ष की संवेदनशील रचना है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने मानव चरित्र के कई परतों को इस कहानी में संवेदनशीलता के साथ रखा है। एक भिखारिन अपने जीवन की समस्त पूंजी द्वारा अपने पालित पुत्र को रोगमुक्त करने के लिए खर्च करना चाहती है, लेकिन समाज का धनवान और धार्मिक रूप में प्रसिद्ध सेठ उसके भीख से संचित धन को लौटाने में छल करता है। 'संतान की पहचान' कहानी को एक निर्णायक मोड़ देती है और पाठकों को मानव चरित्र को समझने और पहचानने का बोध भी देती है। एक सेठ भिखारिन के पाँवों पर क्यों गिर पड़ता है ? वह क्यों यह कहने को विवश है कि 'ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी तो उसकी माँ हो।' कहानी की मार्मिकता को पाठक इन पंक्तियों में शिद्दत से महसूस कर सकते हैं कि–'उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, किन्तु वह भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।'

अंधी प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर खड़ी होती, दर्शन करनेवाले बाहर निकलते तो अपना हाथ फैला देती और नम्रता से बोलती–"बाबू जी, अंधी पर दया हो जाय।"

वह जानती थी कि मंदिर में आनेवाले सहृदय और दयालु हुआ करते हैं। उसका यह अनुमान असत्य न था। आने–जाने वाले दो–चार पैसे उसके हाथ पर रख ही देते थे। अंधी उनको दुआएँ देती और उनकी सहृदयता को सराहती। स्त्रियाँ भी उसके पल्ले में थोड़ा–बहुत अनाज डाल जाया करती थीं।

सुबह से शाम तक वह इसी प्रकार हाथ फैलाए खड़ी रहती। उसके पश्चात् मन–ही–मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी की राह पकड़ती। उसकी झोंपड़ी नगर से बाहर थी। रास्ते में भी वह याचना करती

जाती, किन्तु राहगीरों में अधिक संख्या श्वेत वस्त्र वालों की होती, जो पैसे देने की अपेक्षा झिड़कियाँ दिया करते हैं। तब भी अंधी निराश न होती और उसकी याचना बराबर जारी रहती। झोंपड़ी तक पहुँचते–पहुँचते उसे दो–चार पैसे और मिल ही जाते। झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता–कूदता आता और उससे लिपट जाता। अंधी टटोलकर उसके मस्तिष्क को चूम लेती।

बच्चा कौन है? किसका है? कहाँ से आया? इस बात से कोई परिचित नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास–पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। इन्हीं दिनों एक दिन संध्या समय, लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा, वह रो रहा था। अंधी उसका मुख चूम–चूमकर उसे चुप करने का प्रयत्न कर रही थी। यह कोई असाधारण घटना न थी, अतः किसी ने भी न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से वह बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। उसको वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती।

अंधी ने अपनी झोंपड़ी में एक हाँड़ी गाड़ रखी थी। दिनभर जो कुछ माँगकर लाती, उसमें डाल देती और उसे किसी वस्तु से ढँक देती, ताकि दूसरे व्यक्तियों की दृष्टि उस पर न पड़े। खाने के लिए अन्न काफी मिल जाता था। उससे काम चलाती। पहले बच्चे को पेट भरकर खिलाती, फिर स्वयं खाती। रात को बच्चे को अपने वक्ष से लगाकर वहीं पड़ी रहती। प्रातःकाल होते ही उसको खिला–पिलाकर फिर मंदिर के द्वार पर जा खड़ी होती।

काशी में सेठ बनारसी दास बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति थे। बच्चा–बच्चा उनकी कोठी से परिचित था। वे बहुत बड़े देवभक्त और धर्मात्मा थे। धर्म पर उनकी बड़ी श्रद्धा थी। दिन के बारह बजे तक वे स्नान–ध्यान में संलग्न रहते थे। उनकी कोठी पर हर समय भीड़ लगी रहती थी। कर्ज के इच्छुक तो आते ही थे, परन्तु ऐसे व्यक्तियों का भी ताँता बँधा रहता जो अपनी पूँजी सेठ जी के पास धरोहर रूप में रखने आते थे। सैकड़ों भिखारी अपनी जमा पूँजी इन्हीं सेठ जी के पास जमा कर जाते थे। अन्धी को भी यह बात ज्ञात थी, किंतु पता नहीं कि अब तक वह अपनी कमाई यहाँ जमा कराने में क्यों हिचकिचाती रही।

उसके पास काफी रुपये हो गए थे, हाँड़ी लगभग पूरी भर गई थी। उसको शंका थी कि कोई उसको चुरा न ले। एक दिन संध्या समय अंधी ने वह हाँड़ी उखाड़ी और अपने फटे हुए आँचल में छुपाकर सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची।

सेठ जी बहीखाते के पृष्ठ उलट रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या है, बुढ़िया ?"

अंधी ने हाँड़ी उनके आगे सरका दी और डरते–डरते कहा–"सेठ जी, इसे अपने पास जमा कर लीजिए, मैं अंधी, अपाहिज कहाँ रखती फिरूँगी ?"

सेठ जी ने हाँड़ी की ओर देखकर कहा–"इसमें क्या है?" अंधी ने उत्तर दिया– "भीख माँगकर अपने बच्चे के लिए दो–चार पैसे इकट्ठे किए हैं; अपने पास रखते डरती हूँ। कृपया इन्हें आप अपनी कोठी में रख लें।" सेठ जी ने मुनीम की ओर संकेत करते हुए कहा–"बही में जमा कर

लो।" फिर बुढ़िया से पूछा–"तेरा नाम क्या है ?" अंधी ने अपना नाम बताया, मुनीम जी ने नकदी गिनकर, उसके नाम से जमा कर ली। अंधी सेठ जी को आशीर्वाद देती हुई अपनी झोंपड़ी में चली गई।

दो वर्ष बहुत सुखपूर्वक बीते। इसके पश्चात् एक दिन लड़के को ज्वर ने आ दबाया। अंधी ने दवा–दारू की, वैद्य–हकीमों से उपचार कराया, परंतु सम्पूर्ण प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हुए। लड़के की दशा दिन–प्रतिदिन बुरी होती गई। अंधी का हृदय टूट गया; साहस ने जवाब दे दिया; वह निराश हो गई। परंतु फिर ध्यान आया कि संभवतः डॉक्टर के इलाज से फायदा हो जाए। इस विचार के आते ही वह गिरती–पड़ती सेठ जी की कोठी पर जा पहुँची। सेठ जी उपस्थित थे।

अंधी ने कहा–"सेठ जी, मेरी जमा पूँजी में से दस–पाँच रुपये मुझे मिल जाएँ तो बड़ी कृपा हो। मेरा बच्चा मर रहा है, डॉक्टर को दिखाऊँगी।"

सेठ जी ने कठोर स्वर में कहा–"कैसी जमा पूँजी ? कैसे रुपये ? मेरे पास किसी के रुपये जमा नहीं हैं।" अंधी ने रोते हुए उत्तर दिया–"दो वर्ष हुए, मैं आपके पास धरोहर रूप में रखकर गई थी। दे दीजिए, बड़ी दया होगी।"

सेठ जी ने मुनीम की ओर रहस्यमयी दृष्टि से देखते हुए कहा–"मुनीम जी, जरा देखना तो, इसके नाम की कोई पूँजी जमा है क्या ? तेरा नाम क्या है री?"

अंधी की जान में जान आई, आशा बँधी। पहला उत्तर सुनकर उसने सोचा कि यह सेठ बेईमान है किंतु अब सोचने लगी कि संभवतः इसे ध्यान न रहा होगा। ऐसा धर्मात्मा व्यक्ति भी भला कहीं झूठ बोल सकता है ! उसने अपना नाम बता दिया। मुनीम ने सेठ जी का संकेत समझ लिया था, बही के पृष्ठ उलट–पुलटकर देखा। फिर कहा–"नहीं तो, इस नाम पर एक पाई भी जमा नहीं है।"

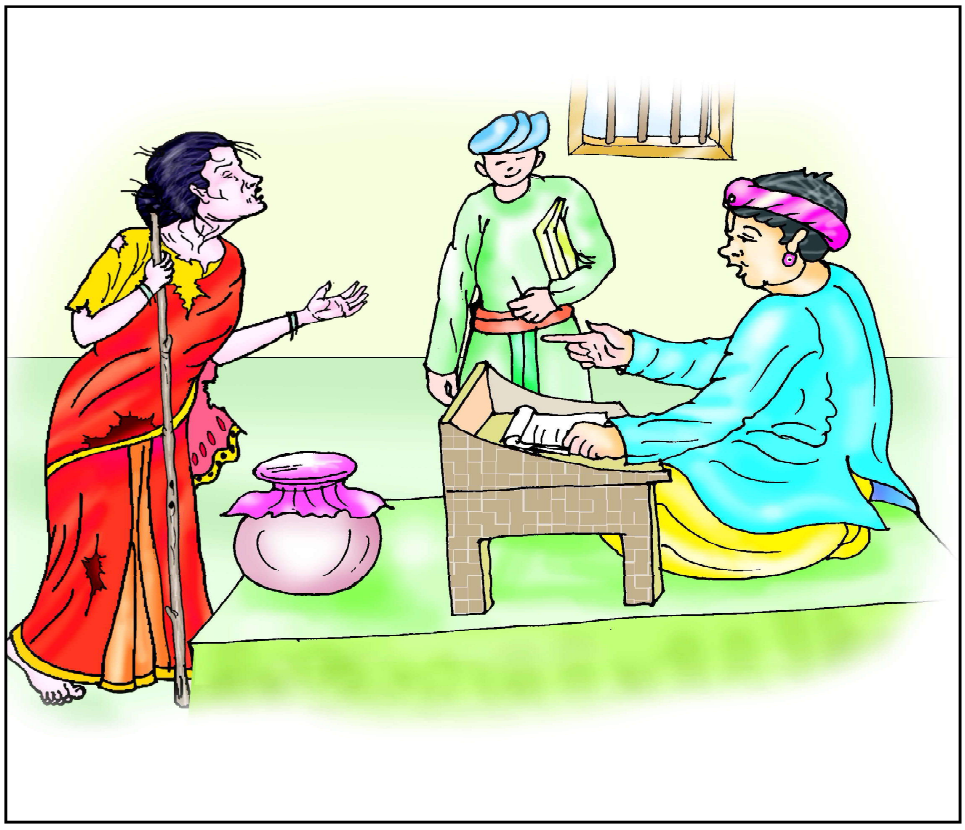

अंधी वहीं जमी बैठी रही। उसने रो–रोकर कहा–"सेठ जी ! परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर, कुछ दे दीजिए। मेरा बच्चा जी जाएगा। मैं जीवन भर आपके गुण गाऊँगी।"

परन्तु पत्थर में जोंक न लगी। सेठ जी ने क्रुद्ध होकर उत्तर दिया–"जाती है या नौकर को बुलाऊँ।" अंधी लाठी टेककर खड़ी हो गई और सेठ जी की ओर मुख करके बोली– "अच्छा! भगवान तुम्हें बहुत दे।" और अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

यह आशीष न थी बल्कि एक दुखिया का श्राप था। बच्चे की दशा बिगड़ती गई, दवा–दारू हुई ही नहीं, फायदा क्यों कर होता? एक दिन उसकी दशा बड़ी चिंताजनक हो गई, प्राणों के लाले पड़ गए, उसके जीवन से अंधी भी निराश हो गई। सेठ जी पर रह–रहकर उसे क्रोध आता था। इतना धनी व्यक्ति है, दो–चार रुपये दे ही देता तो क्या चला जाता और फिर मैं उससे कुछ दान नहीं माँग रही थी, अपने ही रुपये माँगने गई थी। सेठ जी से उसे घृणा हो गई।

बैठे–बैठे उसको कुछ ध्यान आया। उसने बच्चे को अपनी गोद में उठा लिया और ठोकरें खाती, पड़ती सेठ जी के पास पहुँची और उनके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक रहा था और अंधी का कलेजा भी।

एक नौकर किसी काम से बाहर आया। अंधी को बैठी देखकर उसने सेठ जी को सूचना दी। सेठ जी ने आज्ञा दी कि उसे भगा दो।

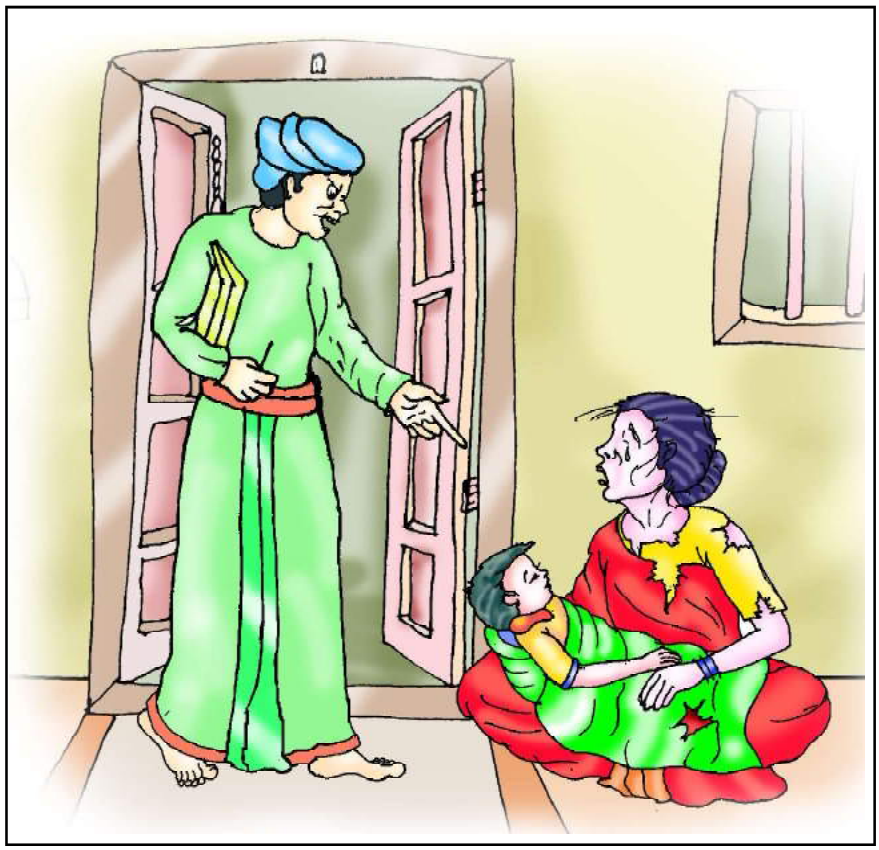

नौकर ने अंधी को चले जाने को कहा, किंतु वह उस स्थान से न हिली। मारने का भय दिखाया, पर वह टस–से–मस न हुई। नौकर ने फिर अंदर जाकर कहा कि वह नहीं टलती।

सेठ जी स्वयं बाहर पधारे। देखते ही पहचान गए। बच्चे को देखकर उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी शक्ल–सूरत, उनके मोहन से बहुत मिलती–जुलती है। सात वर्ष हुए जब मोहन किसी मेले में खो गया था। उसकी बहुत खोज की पर उसका कोई पता न मिला। उन्हें स्मरण हो आया कि मोहन की जाँघ पर लाल रंग का चिह्न था। इस विचार के आते ही उन्होंने अंधी की गोद के बच्चे की जाँघ देखी। चिह्न अवश्य था, परंतु पहले से कुछ बड़ा। उनको विश्वास हो गया कि बच्चा उन्हीं का मोहन है। उन्होंने तुरंत उसको छीनकर अपने

कलेजे से चिपटा लिया। शरीर ज्वर से तप रहा था। नौकर को डॉक्टर लेने को भेजा और स्वयं मकान के अंदर चल दिए।

अंधी खड़ी हो गई और चिल्लाने लगी–"मेरे बच्चे को न ले जाओ; मेरे रुपये तो हजम कर गए,अब क्या मेरा बच्चा भी मुझसे छीनोगे ?"

सेठ जी बहुत चिंतित हुए और बोले–"बच्चा मेरा है; यही एक बच्चा है; सात वर्ष पूर्व कहीं खो गया था। अब मिला है, अब इसको नहीं जाने दूँगा और लाख यत्न करके भी इसके प्राण बचाऊँगा।"

अंधी ने जोर का ठहाका लगाया–"तुम्हारा बच्चा है, इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे। मेरा बच्चा होता तो उसे मर जाने देते, क्यों ? यह भी कोई न्याय है ? इतने दिनों तक खून–पसीना एक करके उसको पाला है। मैं उसको अपने हाथ से नहीं जाने दूँगी।"

सेठ जी की अजीब दशा थी। कुछ करते–धरते नहीं बनता था। कुछ देर वहीं मौन खड़े रहे, फिर मकान के अंदर चले गए। अंधी कुछ समय तक खड़ी रोती रही, फिर वह भी अपनी झोंपड़ी की ओर चल दी।

दूसरे दिन प्रातःकाल प्रभु की कृपा हुई या दवा ने अपना जादू का सा प्रभाव दिखाया कि मोहन का ज्वर उतर गया। होश आने पर उसने आँखें खोलीं, तो सर्व प्रथम शब्द उसकी जबान से निकला–''माँ''। चारों ओर अपरिचित शक्लें देखकर उसने अपने नेत्र फिर बंद कर लिए। उस समय से उसका ज्वर फिर अधिक होना आरम्भ हो गया। माँ–माँ की रट लगी हुई थी, डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सेठ जी के हाथ–पाँव फूल गए, चारों ओर अँधेरा दिखाई पड़ने लगा।

"क्या करूँ, एक ही बच्चा है? इतने दिनों बाद मिला भी तो मृत्यु उसको अपने चंगुल में दबा रही है; इसे कैसे बचाऊँ ?"

सहसा उनको अंधी का ध्यान आया। पत्नी को बाहर भेजा कि देखो कहीं वह अब तक द्वार पर न बैठी हो। परंतु वह यहाँ कहाँ ? सेठ जी ने घोड़ागाड़ी तैयार कराई और बस्ती से बाहर उसकी झोंपड़ी पर पहुँचे। झोंपड़ी बिना द्वार के थी, अंदर गए। देखा कि अंधी एक फटे–पुराने टाट पर पड़ी है और उसके नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है। सेठ जी ने धीरे–से उसको हिलाया। उसका शरीर भी अग्नि की भाँति तप रहा था।

सेठ जी ने कहा–"बुढ़िया ! तेरा बच्चा मर रहा है; डॉक्टर निराश हो गए हैं, रह–रहकर वह तुझे पुकारता है। अब तू ही उसके प्राण बचा सकती है। चल और मेरे.....नहीं, नहीं अपने बच्चे की जान बचा ले।" अंधी ने उत्तर दिया–"मरता है तो मरने दो, मैं भी मर रही हूँ। हम दोनों स्वर्ग–लोक में फिर माँ–बेटे की तरह मिल जाएँगे। इस लोक में सुख नहीं है। वहाँ मेरा बच्चा सुख

में रहेगा। मैं वहाँ उसकी सुचारु रूप से सेवा–सुश्रुषा करूँगी।" सेठ जी रो दिए। आज तक उन्होंने किसी के सामने सिर न झुकाया था, किन्तु इस समय अंधी के पाँवों पर गिर पड़े और रो–रोकर बोले–"ममता की लाज रख लो, आखिर तुम भी उसकी माँ हो। चलो, तुम्हारे चलने से वह बच जायगा।"

ममता शब्द ने अंधी को विकल कर दिया। उसने तुरंत कहा–"अच्छा चलो।"

सेठ जी सहारा देकर उसे बाहर लाए और घोड़ागाड़ी पर बिठा दिया। गाड़ी घर की ओर दौड़ने लगी। उस समय सेठ और अंधी भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। दोनों की यही इच्छा थी कि शीघ्र–से–शीघ्र अपने बच्चे के पास पहुँच जाएँ।

कोठी आ गई; सेठ जी ने सहारा देकर अंधी को उतारा और अंदर ले जाकर मोहन की चारपाई के समीप उसको खड़ा कर दिया। उसने टटोलकर मोहन के माथे पर हाथ फेरा। मोहन पहचान गया कि यह उसकी माँ का हाथ है। उसने तुरंत नेत्र खोल दिए और उसे अपने समीप खड़े हुए देखकर कहा–"माँ, तुम आ गईं।"

अंधी ने स्नेह से भरे हुए स्वर में उत्तर दिया–"हाँ बेटा, तुम्हें छोड़कर कहाँ जा सकती हूँ।" अंधी भिखारिन मोहन के सिरहाने बैठ गई और उसने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। मोहन को बहुत सुख अनुभव हुआ और वह उसी की गोद में सो गया।

दूसरे दिन से मोहन की दशा अच्छी होने लगी और दस–पंद्रह दिनों में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गया। जो काम हकीमों के जोशांदे, वैद्यों की पुड़ियाँ और डॉक्टर की दवाइयाँ न कर सकीं थीं, वह अंधी की स्नेहमयी सेवा ने पूरा कर दिया।

मोहन के पूरी तरह स्वस्थ हो जाने पर अंधी ने विदा माँगी। सेठ जी ने बहुत कुछ कहा–सुना कि वह उन्हीं के पास रह जाए, परंतु वह सहमत न हुई। विवश होकर विदा करना पड़ा। जब वह चलने लगी तो सेठ जी ने रुपयों की एक थैली उसके हाथों में दे दी। अंधी ने पूछा, "इसमें क्या है?"

सेठ जी ने कहा–"इसमें तुम्हारी धरोहर है, तुम्हारे रुपये। मेरा वह अपराध....."

अंधी ने बात काटकर कहा–"यह रुपये तो मैंने तुम्हारे मोहन के लिए ही इकट्ठे किए थे, उसी को दे देना।"

अंधी ने वह थैली वहीं छोड़ दी और लाठी टेकती हुई चल दी। बाहर निकलकर फिर उसने उस घर की ओर नेत्र उठाए। उसके नेत्रों से अश्रु बह रहे थे, किंतु वह भिखारिन होते हुए भी सेठ से महान थी। इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी।

अभ्यास

पाठ से

1. दिव्यांग भिखारिन प्रतिदिन मंदिर के दरवाजे पर जाकर क्यों खड़ी हो जाती थी?
2. झोंपड़ी के समीप पहुँचते ही वह दिव्यांग भिखारिन किसे अपने हृदय से लगा देती थी और क्यों ?
3. दिव्यांग स्त्री सेठ जी के पास अपनी हांडी जमा करने को लेकर परेशान क्यों थी ?
4. सेठ जी की धर्मात्मा छवि भिखारिन के मन में कब टूट गई ?
5. सेठ जी ने मोहन को कैसे पहचाना ?
6. "तुम्हारा बच्चा है इसलिए लाख यत्न करके भी उसे बचाओगे मेरा बच्चा होता उसे मर जाने देते क्यों"? ऐसा भिखारिन ने क्यों कहा ?
7. सेठ जी की ममता मोहन के प्रति क्यों उमड़ आई ?

पाठ से आगे

1. हम धार्मिक स्थलों पर जाते हैं वहाँ मंदिरों के बाहर भीख माँगने वालों की एक कतार देखने को मिलती है। आप मित्रों से बात कीजिए कि लोग भीख क्यों माँगते हैं ?
2. पाठ में लिखा है कि सेठ और भिखारिन दोनों की एक ही दशा थी। आप विचार कर लिखिए कि दोनों की यह दशा क्यों थी?
3. कहानी में सेठ के व्यक्तित्व का कौन सा पहलू आपको प्रभावित करता है, लिखिए।
4. एक विपन्न सी स्त्री द्वारा भीख माँग कर जमा किए गए धन को सेठ द्वारा लेकर देने से इंकार करना किस प्रकार के मानवीय मूल्य का सूचक है ? साथियों से बात कर लिखिए।
5. कहानी के दोनों प्रमुख चरित्रों में से आपकी दृष्टि में महत्वपूर्ण कौन है ? एक बेटे के रूप में श्याम किसे अधिक चाहता है और क्यों ?

भाषा से

1. पाठ में इस तरह से लिखे गए शब्दों को देखिए–

   आने–जाने, दो–चार, थोड़ा–बहुत, मन–ही–मन, उछलता–कूदता, पास–पड़ोस, चूम–चूमकर। शब्दों के मध्य प्रयुक्त चिह्न (–) को योजक चिह्न कहते हैं। योजक चिह्न का प्रयोग सामासिक पदों या द्वित्व और

युग्म शब्दों के मध्य किया जाता है। तुलनात्मक **'सा','सी','से'** के पहले योजक चिह्न का प्रयोग होता है। पाठ में आए अन्य योजक चिह्न वाले शब्दों को खोज कर लिखिए।

2. पाठ में यह सन्दर्भ आया है कि "बच्चा–बच्चा'' उनकी कोठी से परिचित था। इस प्रयोग का अर्थ है हर एक बच्चा या प्रत्येक बच्चा। इसी प्रकार आदमी, पेड़, पत्ता, मन शब्द का इस रूप में स्वतंत्र रूप से वाक्य में प्रयोग कीजिए कि इनका निहित अर्थ स्पष्ट हो जाए।
3. सत्य–असत्य, श्वेत–श्याम, झोंपड़ी– महल जैसे शब्दों का प्रयोग पाठ में हुआ है जो परस्पर विलोम अर्थ को अभिव्यक्त करते हैं। निम्नलिखित शब्दों के विलोम अर्थ को सूचित करने वाले शब्दों को ढूंढ़ कर लिखिए –सुख, प्रसिद्ध, परिचित, पश्चात, कठोर, बिगाड़ना, निराशा, बेईमान, आशीष, बहुत, अँधेरा, अपरिचित।
4. निम्नलिखित शब्दों का छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रचलित रूप लिखिए–

आशीर्वाद, सेठ, बच्चा, संतान, बेटा, दरवाजा, दयालु, मंदिर,झोंपड़ी, प्रसिद्ध, हांड़ी।

योग्यता विस्तार

1. सोचिए कि सेठ जी के स्थान पर आप होते/होतीं तो क्या करते/करतीं।
2. इस कहानी को एकांकी में रूपान्तरित करके कक्षा में उसका अभिनय कीजिए।
3. 'दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का भी हृदय–परिवर्तन संभव है।' कक्षा में इस विषय के पक्ष–विपक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

5UUH5R

4. 'कभी–कभी एक ही कथन या घटना सारी जीवनधारा का रुख मोड़ देती है। कुछ अन्य घटनाओं या प्रसंगों द्वारा इस बात की पुष्टि कीजिए।
5. यह काशी की घटना है। काशी को और किस–किस नाम से जाना जाता है ?

●●●

पाठ 9

त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह

—लेखक मंडल

हमर समाज—देश ल जब कोनो बदलाव के आवश्यकता होथे त कोनो महापुरुष के जनम होथे। अइसने ही हमर छत्तीसगढ़ के मजदूर अऊ किसान के दुख पीरा ल हरे बर अपन जिनगी ल खुवार करैया, पं. सुंदर लाल शर्मा, वीर नारायण सिंह, डॉ. खूबचंद बघेल, पं. रविशंकर शुक्ल जइसन महापुरुष मन होईन। त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह रहिन जेन इहाँ के किसान अउ मजदूर के खुशी के कारण अपन जिन्दगी ल दाँव पर लगा दिन।

कई जुग ले ओ मन ल सुरता करे जाथे जेन ह समाज अउ देश खातिर अपन सब कुछ निछावर कर देथें। ओ मन अपन जिनगी के पल—छिन ल समाज के निरमान म लगा देथें। ओ मन समाज ले कुछु नइ लेवँय, सिरिफ दे बर जानथें। अइसन त्यागी पुरुष दुरलभ होथें। ठाकुर प्यारेलाल सिंह वइसने दुरलभ पुरुष म एक झन रिहिन।

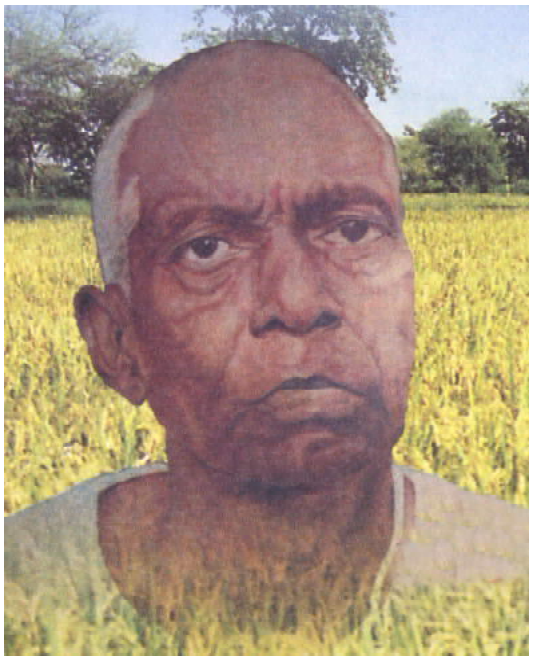

छत्तीसगढ़ के संगे—संग जम्मो देश के कल्यान खातिर ओ मन जेन बलिदान करिन ओकरे सेती ओ मन ल जिते—जियत म त्यागमूर्ति कहे जाय लागिस।

छत्तीसगढ राज के निरमान खातिर जुझइया पहिली नेता मन म ठाकुर प्यारेलाल सिंह के नाँव बड़ सम्मान के साथ लिये जाथे। ठाकुर साहेब ल छत्तीसगढ़ के युग पुरुष म घलो गिने जाथे। ओ मन किसान,मजदूर,बनिहार मन ल सकेल के उकर अधिकार के रक्षा बर अँगरेजी सरकार के संग लड़ाई लड़िन अउ कई बेर जेल गइन।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह के जनम 21 दिसंबर 1891 म राजनाँदगाँव के दइहान गाँव के ठाकुर दीनदयाल सिंह के घर म होय रिहिस। ईंकर माता जी के नाँव श्रीमती नरमदा देवी रिहिस।

ठाकुर साहेब जब 16 साल के रिहिन त उँकर बिहाव रायपुर के ठाकुर भगवान सिंह के बेटी गोमती देवी के संग कर दे गिस। रायपुर के सरकारी हाईस्कूल (अब शासकीय बहुउद्देशीय उच्चतर माध्यमिक शाला) ले मैट्रिक के परीक्षा पास करिन तेकर पाछू नागपुर के हिस्लाप कालेज ले इंटरमीडियट करिन। इही बीच म पिता जी के अचानक देहावसन हो जाय के कारण उँकर पढ़ई म बाधा आ गे। इही कारण ओ मन घर लहुटगें फेर आगू पढ़े के उँकर इच्छा बने रिहिस।

ठाकुर प्यारेलाल सिंह खूबेच गुनवान रिहिन,ओमन बी.ए. के परीक्षा पास करके इलाहाबाद विश्वविद्यालय ले 1916 में वकालत के परीक्षा घलो पास करिन । पढ़ई के संगे–संग खेलकूद म उँकर मन निसदिन लगे रहय। जेन खिलाड़ी भावना उँकर खेल–जीवन म पनपिस ओ ह सार्वजनिक जीवन म घलो बने रहिस। जइसे खेल के मैदान म जी–जान ले लगे रहँय,वोइसनेच राजनीति म घलो जम के डटे रहँय अउ आजादी के पाछू जनता के हित के रक्षा बर दिन रात लगे रहँय।

अँगरेजी शासन काल म देश के स्वदेशी आंदोलन के लहर चले रहिस। ठाकुर साहेब राजनाँदगाँव म स्वदेशी आंदोलन म शामिल हो गइन। अउ राजनाँदगाँव के संगे–संग तीर–तखार के गाँव म घलो राष्ट्रीय चेतना के बिस्तार के काम शुरू कर दिन।

'वंदे मातरम्' राष्ट्रीय एकता अउ चेतना के गीत बनगे रिहिस। ठाकुर साहेब पढ़इया लइकामन के टोली बना के 'वंदे मातरम्' के नारा लगावँय।

कानून के पढ़ाई पूरा करे के पाछू 1916 म ओ मन वकालत शुरू कर दिन। वकालत ल ओ मन समाज सेवा के रद्दा बनाइन। गरीब अउ कमजोर मनखे मन ल नियाव देवाय बर खूबेच काम

करँय। राजनाँदगाँव के बी.एन.सी.मिल के मजदूर मन ल हक देवाय बर ठाकुर प्यारेलाल ह 1920 म सबो मजदूर ल एकजुट करके हड़ताल करा दिन। मिल मजदूर मन के माँग पूरा होय के पाछू आंदोलन खतम होइस। ये ह देश म सही ढंग ले चलाय गे संगठित मजदूर मन के पहिली सब ले लंबा हड़ताल रहिस, जेन ह 36 दिन ले चलिस।

1920 म कांग्रेस ह अँगरेजी शासन के विरोध म असहयोग आंदोलन शुरू कर दिस। ये म ठाकुर प्यारेलाल सिंह घलो कूद गें। गांधी जी के कहना म ओ मन 4 साल ले सरलग वकालत नइ करिन। ये समय म ठाकुर साहेब ह राजनाँदगाँव के तीर–तकार म जन–जागरन के खूब काम करिन, अउ राजनाँदगाँव म राष्ट्रीय विद्यालय खोलिन।खादी के महत्तम के प्रचार करे बर ठाकुर साहेब खुद चरखा चलावँय अउ दूसर मन ल घलो सिखावँय।

रायपुर ह आजादी के लड़ई के बड़े जन जघा बनगे रिहिस। इहाँ ठाकुर साहेब के पं.माधवराव सप्रे,पं.रामदयाल तिवारी अउ बाबू मावली प्रसाद श्रीवास्तव जइसे कई झन देशभक्त साहित्यकार मन ले मेल–मिलाप होइस।

गांधी जी के अगुवइ म जब 1930 म अँगरेज मन के विरोध म सत्याग्रह शुरू होइस त ठाकुर साहेब तन–मन–धन ले ओ म जुड़गें। छत्तीसगढ़ म ये मन आंदोलन के प्रमुख नेता रहिन। धमतरी के बनवासी मन ल उँकर हक देवाय खातिर अउ अंगरेजी सरकार ल लगान नइ दे के मुहिम घलो शुरू करिन,ये ह अँगरेजी सरकार ल सीधा ललकारना रिहिस। एकर सेती ठाकुर साहेब ल एक साल के सजा होइस।

26 जनवरी,1932 के दिन रायपुर के गांधी चौक म ठाकुर प्यारेलाल सिंह ह बहुत कड़क भाषा म भाषण दिन, तेकर सेती ओ मन ल पकड़ ले गिस अउ दू साल के सजा सुनाय गिस। उँकर सरी

सम्पत्ति ल सरकार ह कुर्की कर लिस। ओ मन ल अउ जादा सजा दे खातिर उँकर वकालत के सनद घलो जपत कर ले गिस।

सन् 1933 ले 1937 तक ठाकुर प्यारेलाल सिंह महाकोशल प्रांत कांग्रेस कमेटी के सचिव रहिन। इही समय म ओ मन कई ठन योजना बनाइन। अछूत मन के उद्धार बर काम करिन। हिन्दू–मुसलमान भाईचारा खातिर घलो काम करिन। रायपुर म ओ मन मोमिन बुनकर मन ल एकजुट करके उनला बने मजदूरी देवाय के काम करिन। गीता अउ कुरान दूनों के ठाकुर साहेब विद्वान रहिन। अपन ये गियान के उपयोग ओ मन समाज म तालमेल बढ़ाय बर करते रहँय।

प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री रहत समय ठाकुर साहेब पहिली बेर 1936 म मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य चुने गिन। छत्तीसगढ़ अउ संयुक्त मध्यप्रदेश के सब ले जादा जन नेता मन म ईंकर नाँव गिने जाय। ओ मन तीन बेर रायपुर नगरपालिका के अध्यक्ष अउ दू बेर विधायक चुने गिन।

ओ समय के सी.पी.बरार म जब कांग्रेस के अंतरिम सरकार बनिस त डॉ.खरे के मंत्रीमंडल म ठाकुर साहेब शिक्षा मंत्री बनिन। छत्तीसगढ़ एजुकेशन सोसायटी के स्थापना ईंकर अगुवई म करे गिस जेन ह छत्तीसगढ़ कालेज शुरू करिस। ओ ह छत्तीसगढ़ के पहिली महाविद्यालय रहिस। आज ये ह प्रदेश के प्रमुख महाविद्यालय हवय।

छत्तीसगढ़ म सहकारिता आंदोलन के विकास करे म ठाकुर प्यारेलाल सिंह ह भारी सहयोग देइन। 6 जुलाई 1945 म ओ मन छत्तीसगढ़ बुनकर सहकारी संघ के नींव रखिन। गरीब,मजदूर,किसान अउ आदिवासी मन के ओ मन मुक्तिदूत बनगे रहिन। ठाकुर साहेब के त्यागी,तपस्वी अउ जननेता के एक ठन गजब रूप रहिस। भूमिहीन,खेतिहर मजदूर ल भूस्वामी बनाय के परन के संग आचार्य विनोबा भावे के भू–दान क्रांति के ठाकुर साहेब सिपाही बनगें। ओ मन जेन गाँव म जावँय ऊहाँ मालगुजार अउ बड़े किसान मन अपन जमीन के हिस्सा दान कर देवँय। इही भू–दान के 2200 मील के लंबा यात्रा म जबलपुर के तीर म ठाकुर प्यारेलाल सिंह शहीद होगें।

ठाकुर साहेब अजादी बर जीवन भर लड़ाई लड़िन अउ अजादी मिले के पाछू राजकाज सम्हाले ल छोड़ के समाज के निरमान म लग गें।

उँकर जीवन अउ उँकर कामकाज कई पीढ़ी ल रद्दा देखावत रइहीं।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

सुरता	=	याद	सकेल के	=	इकट्ठा करके
लहुट गें	=	वापस आ गए	तीर–तकार	=	आस–पास
नियाँव	=	न्याय	सरलग	=	लगातार
कड़क	=	कड़ी,कठोर	अगुवाई	=	नेतृत्व
मालगुजार	=	बड़ा किसान,गौंटिया	तीर	=	पास
उँकर	=	उनका	रइहीं	=	रहेंगे
सनद	=	प्रमाण पत्र			

अभ्यास

पाठ से

1. ठाकुर प्यारे लाल सिंह ह वकालत ल समाज सेवा के रद्दा कइसे बनाइस ?
2. छत्तीसगढ़ राज के निरमान खातिर जुझइया नेता ठाकुर प्यारे लाल ल काबर कहे गेहे ?
3. ठाकुर प्यारेलाल ह पढ़ाई में बाधा आय के बाद भी आगु के पढाई कइसे करिस ?
4. ठाकुर प्यारेलाल स्वदेशी भावना ल कहाँ–कहाँ तक बढ़ाइस अउ ओकर जनता में का–का परभाव परिस?
5. भू–दान आंदोलन के का मतलब होथे, अउ प्यारेलाल के भू–दान आन्दोलन म का योगदान रहिस ? लिखव।
6. शिक्षा के क्षेत्र म ठाकुर साहेब के का योगदान रहिस?

पाठ से आगे

1. खिलाड़ी भावना के का अर्थ होथे अउ वोकर अपन जीवन में कइसे प्रयोग करे जा सकथे? कक्षा में समूह में चर्चा कर के लिखव।
2. ठाकुर प्यारेलाल जइसन छत्तीसगढ़ के कोन–कोन नेता रहिन वोकर आजादी में का–का योगदान रहिस शिक्षक अउ साथी से जानकारी प्राप्त करव।

5VD992

3. ठाकुर साहेब जन सेवा के अब्बड़ काम करिन। जन सेवा के का मतलब होथे। तु मन ल जन सेवा के मौका मिलही त का–का करहु। सँगवारी मन सन बात कर लिखव।
4. छत्तीसगढ़ म असहयोग आन्दोलन म भाग लेवइया अउ आंदोलनकारी मन के नाम ल खोज के लिखव।

भाषा से

1. पाठ म 'जुझइया' शब्द पर धियान देवव, ये 'शब्द' जूझना क्रिया म इया प्रत्यय के जोड़ ले बनिस 'जुझइया'।

   तु मन पाँच क्रिया शब्द म 'इया' प्रत्यय लगाके नवां शब्द बनवाव अउ अपन वाक्य में प्रयोग करव।

2. पाठ म तीर–तखार सब्द आय हावे। तीर सब्द ह सार्थक सद आय। एकर अर्थ हे 'नजदीक' या पास फेर तखार सब्द के कोनों अर्थ नइ निकले। दुनो सब्द के संघरा प्रयोग करे ले सब्द–युग्म बन जाथे। अउ एकर अर्थ निकलथे आस–पास। अइसने ढंग के युग्म सब्द हे चाय–वाय।'

   सब्द–युग्म के पाँच सब्द सोच के लिखव अउ ओला अपन वाक्य म प्रयोग करव।

3. खाल्हे लिखाय सब्द मन के उल्टा अर्थ वाला सब्द लिखव–

   सुरता, कड़क, निरमान, दुरलभ, स्वदेशी, नियाव, पहिली, तीर–तखार।

योग्यता विस्तार

1. छत्तीसगढ़ के अउ स्वतंत्रता सेनानी मन (पं. माधव राव सप्रे, पं. राम दयाल तिवारी) के जीवनी खोज के पढ़व।
2. स्वतंत्रता सेनानी मन के जीवन ले हमन ला का प्रेरणा मिलथे ? संगवारी मन सन बात कर लिखव।

●●●

पाठ 10

सितारों से आगे

– लेखकमंडल

एक सामान्य सी दुबली–पतली करनाल (हरियाणा) की बिटिया, अपनी प्रतिबद्धता और साहस से इतना कुछ करती रही जो भारत की ही नहीं विश्व की बेटियों में अपनी पहचान कायम कर सकी। माता–पिता की चौथी संतान कल्पना चावला बचपन से नक्षत्र लोक को घंटों निहारा करती थी। वह एक अन्तरिक्ष–यात्री के रूप में स्पेस सटल 'कोलम्बिया' में बैठकर अंतरिक्ष के गूढ़ रहस्य खोलने की यात्रा पर थी। जान जोखिम में डालने वाली इस यात्रा में यह सच है वह अपना जान गँवा बैठी पर एक जीवंत इतिहास अवश्य रच डाली। बचपन के इस वक्तव्य को उसने अपना बलिदान देकर साबित किया कि 'जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ।'

1 फरवरी 2003, विश्व के लोग अपने–अपने टेलीविजन सैट पर आँखें गड़ाए हुए थे। अमेरिका में फ्लोरिडा के केप केनेवरल अंतरिक्ष केंद्र के बाहर दर्शकों की भीड़ थी। सबकी आँखें आकाश की ओर लगी थीं। अवसर था कोलंबिया शटल के पृथ्वी पर लौटने का। भारत के लोग भी आतुरता से टी. वी. पर बैठे इस दृश्य को देख रहे थे। उनकी आतुरता का कारण यह भी था कि इस अंतरिक्ष अभियान में भारत की बेटी, इकतालीस वर्षीया कल्पना चावला भी शामिल थी। उसके परिवार के लोग तो फ्लोरिडा में ही अपनी बेटी के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। यहाँ भारत में उसके नगर करनाल में उसी के विद्यालय–टैगोर बाल निकेतन– के लगभग तीन सौ छात्र–छात्राएँ अपने विद्यालय की पूर्व छात्रा, कल्पना चावला के अंतरिक्ष से सकुशल वापस लौटने को उत्सव के रूप में मनाने के लिए एकत्र हुए थे।

प्रकृति के रहस्यों को खोजने में जान का जोखिम रहता ही है। एवरेस्ट विजय करने में दर्जनों पर्वतारोहियों ने अपनी जानें गँवाई हैं। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव की खोज में भी अनेक सपूतों ने अपने बलिदान किए हैं। यही स्थिति अंतरिक्ष अभियान की भी है। जब तक अभियान पूरी तरह सफल न हो जाए, तब तक अंतरिक्ष यात्रियों, अंतरिक्ष केंद्र के संचालकों, दर्शकों के हृदय में

धुकधुकी लगी रहती है। उस दिन भी केप केनेवरल में प्रातः 9 बजे दर्शकों की साँस ऊपर की ऊपर रह गई। पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश के साथ ही कोलंबिया शटल का संपर्क अंतरिक्ष केंद्र से टूट गया। सहसा कुछ मिनटों के बाद टेक्सास के ऊपर एक जोरदार धमाका सुनाई दिया। ह्यूस्टन कमान केंद्र में घबराहट फैल गई। कोलंबिया स्पेस शटल में सवार सभी सातों अंतरिक्ष यात्रियों के शरीर के चिथड़े–चिथड़े होकर अमेरिका की भूमि पर यहाँ–वहाँ बिखर गए। भारत ने उस दिन अपने जाज्वल्यमान नक्षत्र, कल्पना चावला, को खो दिया। समूचे देश में, विशेष रूप से करनाल में, शोक की लहर दौड़ गई। टैगोर बाल निकेतन में आयोजित होनेवाला उत्सव, शोक–सभा में परिवर्तित हो गया। इस हादसे से एक अरब से अधिक देशवासियों के चेहरे मुरझा गए। करनाल की यह विलक्षण बेटी सफलतापूर्वक एक यात्रा पूरी कर चुकी थी, लेकिन दूसरी यात्रा में वही दुबली–पतली लड़की अपनी मधुर मुस्कान और दृढ़ संकल्प के साथ अपने सपनों को साकार न कर पाई। कल्पना के जीवन की यह कहानी करनाल से प्रारम्भ हुई और अंतरिक्ष में समाप्त हुई। आओ, इस कहानी का प्रारंभ देखें।

बनारसी दास चावला भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान से भारत आकर करनाल में बसे थे। सन् 1961 में यहीं कल्पना का जन्म हुआ था। बनारसीदास चावला की यह चौथी संतान थी। माता–पिता अपनी दुलारी बेटी को मोंटू कहते थे। शिक्षा के क्षेत्र में मोंटू का परिवार काफी आगे था। मोंटू की स्कूली शिक्षा करनाल के टैगोर बाल निकेतन में ही हुई। गर्मी के दिनों में रात को खुले आसमान में तारागणों की ओर निहारती हुई कल्पना नक्षत्र–लोक में पहुँच जाती थी। शायद यहीं से उसे अंतरिक्ष–यात्रा की सूझी थी।

जागरुक पिता ने अपनी प्यारी बेटी मोंटू की रुचि को भाँप लिया था और जब वह आठवीं कक्षा में थी, तभी उसे पहली उड़ान कराई थी। एंट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण करके कल्पना ने इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू की। इंजीनियरिंग में उसने अंतरिक्ष विषय लिया। चंडीगढ़ के पूर्वी पंजाब इंजीनियरिंग महाविद्यालय में उस समय तक एयरोनाटिक विभाग में कम छात्र–छात्राएँ ही दाखिला लेते थे। छात्राओं का प्रतिशत तो और भी कम रहता था। कॉलेज में पढ़ते समय कल्पना दत्तचित्त होकर अपना कोर्स तो तैयार करती ही थी, साथ ही कॉलेज के सभी क्रियाकलापों में भी भाग लेती थी। वह अक्सर कहती थी – ''जो काम लड़के कर सकते हैं, वह मैं भी कर सकती हूँ।''

कल्पना को जब एयरोनाटिक्स की डिग्री मिल गई, तब उसने अपनी आगे की पढ़ाई अमेरिका में करने का मन बनाया। उसे वहाँ प्रवेश भी मिल गया। वहीं उसका परिचय जीन पियरे से हुआ। दिसम्बर 1983 में वे दोनों विवाहसूत्र में बँध गए।

विवाह के उपरांत भी कल्पना ने अंतरिक्ष में उड़ने का अपना ध्येय अटल रखा। एक दिन उसे टेलिफोन पर नासा से समाचार मिला–'हमें खुशी होगी यदि आप यहाँ आकर एक अंतरिक्ष यात्री के रूप में अंतरिक्ष कार्यशाला में भाग लें।' कल्पना के लिए तो यह मनमाँगी मुराद पूरी होना था। नासा द्वारा अंतरिक्ष–यात्रा के लिए चुने जाने का गौरव बिरले ही लोगों के भाग्य में होता है।

6 मार्च 1995 से कल्पना का एकवर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। तरह–तरह की प्रशिक्षण प्रणालियों के द्वारा इन अंतरिक्ष यात्रियों को तैयार करने में कई महीने लग जाते हैं। कल्पना को इस अवधि में जो उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य सौंपे जाते थे, वह उन्हें पूरी निष्ठा से करती थी।

19 सितम्बर 1997 को एस टी एस 87 के अभियान दल के सदस्यों का परीक्षण हुआ। इनमें कुछ पुराने अनुभवी सदस्य थे तो कुछ नए भी थे। कल्पना का यह पहला अभियान था। उड़ान से पहले अंतरिक्ष यात्री अपने–अपने परिजनों से मिले। इसके बाद सब एक–एक करके अंतरिक्ष–यान में सवार हुए। अंतरिक्ष–यान 17500 मील प्रति घंटे की गति से उड़ा। कल्पना के लिए इतनी ऊँचाई से विश्व की झलक देख पाना एक दैवी कृपा के समान था। यह यान सत्रह दिनों तक अंतरिक्ष में घूमता रहा और अंतरिक्ष यात्री अपने प्रयोग करते रहे। अंततः शुक्रवार प्रातः 6 बजे अंतरिक्ष–यान कैनेडी अंतरिक्ष केंद्र पर उतरा। दर्शक दीर्घा में बैठे अंतरिक्ष–यात्रियों के परिवार के लोगों ने यान के सकुशल वापस लौट आने पर ईश्वर को धन्यवाद दिया।

इस उड़ान में उपग्रह और कंप्यूटर प्रणाली में कुछ गड़बड़ी आ गई थी। इस गड़बड़ी का दोष कल्पना पर लगाया गया। जाँच दल के सामने कल्पना ने निर्भीक होकर अपनी बात कही। कल्पना के तर्क से सहमत होकर जाँच दल ने उसे पूर्ण रूप से दोषमुक्त कर दिया। अतः उसे इसके बाद दूसरे अभियान के लिए भी चुना गया। दूसरे अभियान की तिथि 16 जनवरी 2003 निश्चित की गई। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य भौतिक क्रिया का अध्ययन करना था जिससे बदलते मौसम एवं जलवायु का ज्ञान सुलभ हो सके।

अपने निर्धारित समय पर यह अभियान चला। इस अभियान में कल्पना अपने साथ संगीत की कई सीडी ले गई थी। इस अभियान में अनेक धर्मों के अंतरिक्ष यात्री भाग ले रहे थे और वहाँ सर्वधर्म समभाव का माहौल बन गया था। कल्पना समय–समय पर सीडी के गाने सुनकर तरोताजा हो जाती थी। स्पेस शटल अपने निर्धारित कार्यक्रम, निर्धारित समय में पूरा करके वापस पृथ्वी की ओर आ रहा था। तभी 1 फरवरी 2003 का वह काला दिन आया जब स्पेस शटल तथा उसमें सवार सात अंतरिक्ष–यात्रियों के शरीर के क्षत–विक्षत अंग अमेरिका की धरती पर इधर–उधर बिखर गए। सम्पूर्ण विश्व में इस दुर्घटना से शोक की लहर फैल गई।

कल्पना का जन्म और जीवन सामान्य जैसा ही था किन्तु उसकी उपलब्धियाँ असामान्य थीं। वह सदा नई जानकारी, नए अनुभव, नए चमत्कार करना चाहती थी। सारे विश्व के बच्चों के लिए उसका यही संदेश था– 'अपने विश्वास के धरातल से आगे बढ़कर चलो, तभी असंभव को संभव बनाया जा सकता है।' कल्पना के इसी संदेश को जीवंत रखने के लिए उसके परिवार ने 'मोंट्यू फाउंडेशन' की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य है प्रतिभावान नवयुवकों और नवयुवतियों को, जिन्हें धनाभाव के कारण उच्च शिक्षा से वंचित होना पड़ता है, विश्वविद्यालय की शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करना।

अभ्यास

पाठ से

1. विश्व के लोग टेलीविजन पर आँखें क्यों गड़ाए हुए थे ?
2. टैगोर बाल निकेतन करनाल के बच्चे किसका और क्यों इंतजार कर रहे थे?
3. विश्व में शोक की लहर क्यों दौड़ गई ?
4. कल्पना खुले आसमान को क्यों निहारती थी ?
5. कल्पना का अटल ध्येय क्या था ?
6. ''जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ'', कल्पना चावला यह क्यों कहती थी?
7. मोंट्यू फाउंडेशन का उद्देश्य क्या है ?

पाठ से आगे

1. कल्पना चावला को भारत की बेटी क्यों कहा गया है? इस विषय पर आप अपने शिक्षकों के साथ चर्चा कर उनकी विशेषताओं को लिखिए।

2. बचपन में आकाश को निहारते–निहारते कल्पना अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकीं। आप भी अपने लक्ष्यों के बारे में लिख कर कक्षा में सुनाइए।
3. कल्पना का मानना था कि जो काम लड़के कर सकते हैं वह मैं भी कर सकती हूँ। आप कक्षा में चर्चा कर लिखिए कि जीवन का ऐसा कौन सा क्षेत्र है जहाँ लडकियाँ कार्य नहीं कर सकतीं।
4. एयरोनाटिक्स इंजीनियरिंग, इंजीनियरिंग का कौन सा क्षेत्र है और इसमें किस विषय की पढ़ाई होती है ? शिक्षक और साथियों से बातचीत कर लिखिए।

भाषा से

1. निम्नलिखित समानोच्चरित शब्दों को इस प्रकार वाक्यों में प्रयोग कीजिए, जिससे उनके अर्थ में अंतर स्पष्ट हो जाए–

   साहस/सहसा, परिणाम/परीमाण, दिन/दीन, अपेक्षा/उपेक्षा, श्वेत/स्वेद, अनु/अणु।

2. पाठ में निम्नांकित मुहावरों का प्रयोग हुआ है वाक्य में स्वतंत्र रुप से उनका इस तरह प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए–

   आँखें गड़ाना, आँखें आकाश की ओर लगाना, बलिदान देना, साँस ऊपर की ऊपर रह जाना, शोक की लहर दौड़ना, मन माँगी मुराद पूरी होना।

3. पाठ में आतुरता, सफलता, प्रमुखता,असमानता जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जिनमें मूल शब्द के साथ 'ता' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। आप ता प्रत्यय को जोड़ते हुए दस शब्दों का निर्माण कीजिए ।

योग्यता विस्तार

1. स्त्री शक्ति के रूप में भारत का नाम विभिन्न क्षेत्रों में रौशन करने वाली नारियों की सूची बनाइए और कक्षा में उस पर चर्चा कीजिए।
2. भारत की प्रथम महिला एवरेस्ट विजेता बछेन्द्री पाल की जीवनी खोज कर पढ़िए।

●●●

पाठ 11

कोई नहीं पराया

– श्री गोपाल दास 'नीरज'

69BSZH

प्रस्तुत कविता मनुष्य–मनुष्य के बीच के बंटवारे, विभेद, जाति, लिंग, धर्म, रंग, वर्ण जनित विभिन्न तरह की संकीर्णताओं पर मन में सवाल खड़ा करता है। कवि प्रस्तुत कविता के जरिए धर्म और जाति से जुड़ी तमाम नफरत की दीवारों को गिराने का आह्वान करते हैं। कवि एकता का संदेश देते हुए कहते हैं कि उसका आराध्य मनुष्य मात्र है और उसके लिए देवालय हर इंसान का घर है। कवि स्पष्ट कहते हैं कि इस संसार में कोई पराया नहीं है सब ईश्वर की संतान हैं।

ईश्वर को लोग अपनी समझ और सन्दर्भ से अल्लाह, गॉड, राम, रहीम कहते हैं। जिस तरह से फूल, बाग की शोभा पहले है, डाल की शोभा बाद में है, वैसे ही मनुष्य जाति, धर्म, प्रान्त अथवा राष्ट्र की शोभा बाद में है, पहले विश्व की शोभा है। इस तरह से कवि "वसुधैव कुटुम्बकम" के सहज संदेश को कविता के जरिए सम्प्रेषित करते हैं।

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।
मैं न बँधा हूँ, देश–काल की जंग लगी जंजीर में,
मैं न खड़ा हूँ जात–पाँत की ऊँची–नीची भीड़ में,
मेरा धर्म न कुछ स्याही–शब्दों का सिर्फ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट–घट में राम है,
मुझसे तुम न कहो मंदिर–मस्जिद पर सर मैं टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

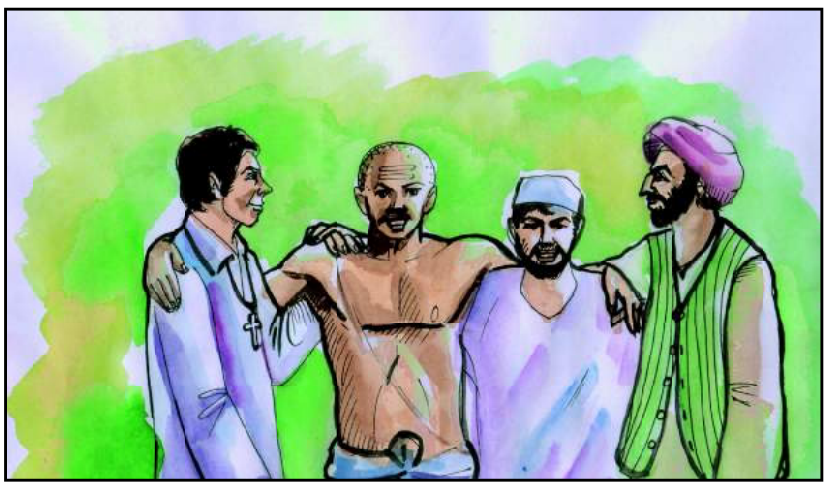

कहीं रहे कैसे भी मुझको प्यारा यह इंसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत–बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार, सकल अमरत्व भी,
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग–सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती सौ–सौ स्वर्गों से ज्यादा सुकुमार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।
मैं सिखलाता हूँ कि जिओ और जीने दो संसार को,
जितना ज्यादा बाँट सको तुम बाँटो अपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह कुचल न जाए पग से कोई फूल भी,
सुख न तुम्हारा सुख, केवल जग का भी इसमें भाग है,
फूल डाल का पीछे, पहले उपवन का शृंगार है।
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।।

अभ्यास

पाठ से

1. कवि को मानवता पर क्यों अभिमान है ?
2. जात–पाँत के बंधनों ने मानवता को क्या हानि पहुँचाई है ?
3. स्वर्ग सुख की सुकुमार कहानियों को कवि क्यों नहीं सुनना चाहता है ?
4. कवि संसार को क्या सिखाना चाहता है ?
5. जंग लगी जंजीर किसे और क्यों कहा गया है ?
6. धर्म को कवि ने कुछ स्याह शब्दों का गुलाम क्यों कहा है ?